



प्रत्यूष

एक नई सुबह



त्रैमासिक ई - पत्रिका

जून 2023 खंड 1 अंक 2

हिंदी विभाग

प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल, अबु धाबी



सर्वाधिकार सुरक्षित

ई-मेल : editor.pratyush@bhavansabudhabi.com

संपर्क क्रमांक : +971 25591777

प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल, अबु धाबी

विद्यालय वेब पता : <https://bhavansabudhabi.com/>

नोट : इस पत्रिका का किसी भी रूप में व्यावसायिक दृष्टिकोण नहीं है।

इस पत्रिका में समाहित सामग्री का उद्देश्य विद्यार्थियों का प्रोत्साहन ही एकमात्र उद्देश्य है।

आपके लेख, कविता, कहानी, यात्रा वृत्तान्त आदि पत्रिका में शामिल करने हेतु ईमेल करें -
editor.pratyush@bhavansabudhabi.com

क्रम



संपादन मण्डल

प्रधान संपादक
आयुष बिसोई

सहायक संपादक
साकिब मंज़र

संपादन सदस्य
रुमेसा शेख
हेत्वी पटेल
कीर्तना नायर
हेत कथेचा
न्यास मेहता
आस्मा शेख

परामर्श मण्डल

रवि शुकला
इंदु
हेमलता गौड़
मुईनुद्दीन हाश्मी
डॉ गीता भट्ट
रजिया रशिक
मंजू मैथ्यू
डिम्पी डागर

संपादक की कलम से

आशीष वचन

विद्यार्थी वाणी

अनुभव वाणी

गुरूपदेश

गतिविधियों में हम

लिखो और जीतो

बूझो तो जाने - पहेलियाँ

हिंदी में भविष्य



आयुष बिसोई
प्रधान संपादक

प्रिय पाठकों,
नमस्कार !

हम संपादन मण्डल के समस्त सदस्यगण आपको 'प्रत्यूष-एक नई सुबह' त्रैमासिक पत्रिका का दूसरा संस्करण प्रस्तुत कर रहे हैं। जैसा कि आप जानते हैं, 'प्रत्यूष' एक त्रैमासिक पत्रिका है जिसमें लेख, कलाकृतियाँ, शिक्षक, माता-पिता के संदेश, आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ और मजेदार तथ्य शामिल होते हैं। इसके पहले अंक को आप सभी की सराहना और खूब प्यार मिला, जिसके लिए मैं अपने पूरे संपादन मण्डल की ओर से आभार व्यक्त करता हूँ।

इसके दूसरे संस्करण को तीन महत्वपूर्ण विषयों पर केंद्रित करने की कोशिश की गई है - प्रकृति, मातृत्व और योग। एक तरह से यह संस्करण पर्यावरण दिवस, मातृ दिवस और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को समर्पित है। ये तीनों ही विषय हमारे जीवन से सीधे जुड़े हुए हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। इसके महत्व को समझने का भाव विद्यार्थी जीवन में आना नितान्त अनिवार्य है, इसलिए इस संस्करण को एक जिम्मेदारी के भाव के रूप में आप सभी स्वीकार्य करेंगे, मुझे इसका पूरा विश्वास है।



सुरेश वी. बालकृष्णन
प्रधानाचार्य

प्रत्यूष के प्रिय पाठकों,
अभिवादन !

हिंदी विभाग द्वारा प्रत्यूष का दूसरा संस्करण अत्यधिक रचनात्मकता और प्रतिबद्धता के साथ तैयार किया गया है। जिन विषयों और प्रसंगों को यहाँ सम्मिलित किया गया है, वे मेरे विचारों को प्रेरित करते हैं और मैं इसे संग्रहित करके रखूँगा। पर्यावरण, माता और योग से ही मेरी मूल पहचान हैं। मेरे लिए 'योग' एक मिलन की तरह है। मन और शरीर का मिलन; स्वयं और पर्यावरण का मिलन। 'मातृत्व' को मेरी सीमित शब्दावली द्वारा आसानी से परिभाषित नहीं किया जा सकता है। इसे अनुभव और आत्मसात करना होगा। यह बहुत सारे मिलन और पुनर्मिलन की मांग करता है। अपनी माता के बिना कोई पूर्ण नहीं हो सकता। अब पर्यावरण की अवधारणा की बात करते हैं। मनुष्य और उसका पर्यावरण अविभाज्य हैं। जो पर्यावरण से जितना दूर होता जाता है, उसका पतन उतना ही निकट होता जाता है।

संयोग से ही सही, प्रत्यूष के दूसरे संस्करण के पन्ने निश्चित रूप से आपकी कल्पना को उड़ान देंगे। मैं हिंदी विभाग और उसके संपादकीय बोर्ड के युवाओं द्वारा नवीनता और प्रतिबद्धता बनाए रखने के लिए उनका आभारी हूँ। मैं इस संस्करण की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

मेरी ओर से प्रत्यूष से जुड़े सभी सदस्यों को शुभकामनाएँ।



मिनी रमेश
उप-प्रधानाचार्या

प्रिय टीम प्रत्यूष,
अभिवादन !

‘प्रत्यूष’ का यह दूसरा संस्करण तीन महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डालता है जो हमारे जीवन में बहुत महत्व रखते हैं: पर्यावरण, मातृ-प्रेम और योग का महत्व। इनमें से प्रत्येक विषय अपने आप में महत्वपूर्ण है और उन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है जो हमारे अस्तित्व में गहराई से निहित हैं। इन परस्पर जुड़े विषयों के मूल में, यह पहचानना आवश्यक है कि हमारे कार्य हमारे आस-पास को ही नहीं, बल्कि वैश्विक समुदाय को भी प्रभावित करते हैं।

मैं उन सभी लोगों की प्रशंसा करना चाहती हूँ, जिनके प्रतिभाशाली लेख, मनोहर कहानियाँ और अद्भुत कलाकृतियों ने इस संस्करण को वास्तव में विशेष बना दिया है। आपके प्रयासों ने हमारी इन विषयों की समझ को समृद्ध किया है और हमें अपने जीवन और हमारे आसपास की दुनिया में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित किया है।

हम अपने पाठकों को इस पत्रिका के पन्नों में खुद को लीन करने के लिए आमंत्रित करते हैं। आइए विचारों को पोषित करने वाली इस सामग्री का अन्वेषण करें और संयुक्त रूप से एक उज्ज्वल और सतत भविष्य सृजित करने के बारे में विचार करें। साथ ही साथ, पर्यावरण के अनुकूल कार्यों में संलग्न हों, मातृत्व की पोषणात्मक भावना का सम्मान करें और योग के महत्व को जानकर अपने जीवन में परिवर्तन लेकर आएँ।



रवि शुक्ला

विभाग प्रमुख

प्रिय विद्यार्थियों,
अभिवादन !

‘प्राप्ति में जो मुख है व प्रतीक्षा में कहाँ !’

कुछ माह पहले सिर्फ एक सोच ने जन्म लिया और उस सोच पर कार्य करते हुए मार्च 2023 के महीने में उसे साकार रूप देने का कार्य हमारे प्रतिभावान विद्यार्थियों ने कर दिखाया। सोच के साकार होने का सफलतम उदाहरण है ‘प्रत्यूष - एक नई सुबह। ‘प्रत्यूष’ के पहले अंक को विद्यार्थी, पालक, शिक्षक और भारतीय विद्या भवन, मिडिल ईस्ट के अन्य विद्यालयों की भूरी - भूरी प्रशंसा प्राप्त हुई। इस प्रशंसा के बाद जिम्मेदारी का भाव बढ़ना स्वाभाविक है। इस जिम्मेदारी के एहसास के साथ ही ‘जून 2023’ का अंक निर्धारित विषयों के साथ आपके हाथों में सौंपा जा रहा है। यह केवल एक पत्रिका का अंक नहीं अपितु जिम्मेदारी का आदान - प्रदान भी है। हमारे विद्यार्थियों की समझ को विकसित करने और उनके भीतर यह भाव जगाने का प्रयास है कि लक्ष्यहीन सफर और उद्देश्यहीन कार्य जीवन में बहुतेरे दिखाई देंगे, लेकिन इन्हें लक्ष्यपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण बनाने के अवसर खुद निर्माण करने होते हैं। इसलिए इस अंक में जन्मदात्री माँ, निःस्वार्थ पर्यावरण और स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने के भाव शामिल हैं। मैं दावे से यह कह सकता हूँ कि इस पत्रिका में शामिल लेख, कविताएँ अन्यादि महज औपचारिकता नहीं हैं अपितु विद्यार्थियों के अंतस में खुरचन पैदा करने का सफल भाव है।

कई विद्यार्थी हैं जो कि हिंदी से प्रेरित होकर इस पत्रिका में बढ़चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं, इससे स्पष्ट है कि यह मात्र गतिविधि नहीं अपितु जीवन निर्माण का कार्य है। इसे पढ़ते हुए कई जगह आपको विद्यार्थियों के अधपके प्रयास दिखाई देंगे, लेकिन उन प्रयासों को आप और हम मिलकर प्रोत्साहन की पवित्र अग्नि प्रदान कर ही पूर्ण रूप दे पाएंगे। मेरा मानना है कि प्रयास होना नितांत आवश्यक है, इससे फ़र्क नहीं पड़ता कि गलतियाँ कितनी हुई हैं। मैं उन गलतियों को स्वीकार्य कर इस अंक को आपके बीच पूर्ण जिम्मेदारी के साथ परोस रहा हूँ, ताकि ये नौनिहाल कल इसी अधपके विचार के बल पर प्रयास करते हुए अपनी दुनिया में परिपक्वता को प्राप्त कर सकें।



इंदु

विभाग प्रमुख (प्राथमिक)

प्रिय विद्यार्थियों,
अभिवादन !

"एक अच्छी शिक्षा एक बेहतर भविष्य की नींव है"- एलिजाबेथ वॉरेन के इस महत्वपूर्ण कथन को ध्यान में रखते हुए हिंदी विभाग 'प्रत्युष - एक नई सुबह' त्रैमासिक पत्रिका का दूसरा संस्करण प्रकाशित करने जा रहा है। जिसका उद्देश्य प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल के विद्यार्थियों को केवल कक्षा व विद्यालय तक सीमित न रखते हुए उन्हें वैश्विक नागरिक बनाना है। जैसा कि आप सभी जानते हैं प्रत्युष त्रैमासिक पत्रिका हमारे होनहार विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली एक उत्कृष्ट पत्रिका है, इस बार हमारे विद्यार्थियों ने विश्व मातृ दिवस, विश्व योग दिवस और विश्व पर्यावरण दिवस जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं को इस पत्रिका में शामिल किया है। आशा है आप लोगों को ये काफी पसंद आएगा, जिससे विद्यार्थियों का और अधिक उत्साह बढ़ेगा।

मैं यह उद्धृत करना चाहती हूँ कि किताबें और पत्रिकाएँ मित्रों में सबसे शांत और स्थिर हैं ; सलाहकारों में सबसे सुलभ और बुद्धिमान हैं, और शिक्षकों में सबसे धैर्यवान हैं। इस भाव को जगाकर ही इस पत्रिका के महत्व को समझा जा सकता है।

A close-up photograph of a person's hands writing in a spiral-bound notebook. The person is wearing a blue long-sleeved shirt. The notebook is open, showing lined pages with some handwritten text. The background is a blurred green field, suggesting an outdoor setting. The text 'विद्यार्थी वाणी' is overlaid in a large, bold, blue font across the center of the image.

विद्यार्थी वाणी



पर्यावरण

- वियाना लोबो

पर्यावरण आज की दुनिया में बहुत महत्त्व का विषय है। पर्यावरण हमारे चारों ओर की प्राकृतिक दुनिया है, जिसमें हम जिस हवा में सांस लेते हैं, जो पानी हम पीते हैं, जिस जमीन पर हम रहते हैं और उसमें रहने वाले जानवर और पौधे शामिल हैं। इस ग्रह पर मनुष्यों सहित सभी प्राणियों के जीवित रहने के लिए पर्यावरण का स्वास्थ्य और कल्याण महत्त्वपूर्ण है। इस लेख में, हम पर्यावरण के महत्त्व और उन विभिन्न तरीकों पर चर्चा करेंगे जिनसे हम इसकी रक्षा कर सकते हैं।

पर्यावरण क्यों महत्त्वपूर्ण है इसका एक प्राथमिक कारण यह है कि यह हमें जीवित रहने के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करता है। हम जिस हवा में सांस लेते हैं, जो पानी हम पीते हैं और जो खाना हम खाते हैं, वह सब पर्यावरण से आता है। स्वस्थ पर्यावरण के बिना हम खुद को बनाए रखने में सक्षम नहीं होंगे।

दुर्भाग्य से, पर्यावरण विभिन्न कारणों से खतरे में है। जिनमें प्रदूषण, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन कुछ ऐसे मुद्दे हैं जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहे हैं। प्रदूषण, विशेष रूप से, दुनिया के कई हिस्सों में एक बड़ी समस्या है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और मृदा प्रदूषण मनुष्यों और जानवरों दोनों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं।

पर्यावरण की रक्षा के लिए हमें कई मोर्चों पर कार्रवाई करने की जरूरत है। सबसे महत्त्वपूर्ण चीजों में से एक जो हम कर सकते हैं वह है अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करना। इसका अर्थ है कम ऊर्जा का उपयोग करना, कम ड्राइविंग करना आदि।

पर्यावरण हमारी दुनिया का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है जिसका हमें ध्यान रखना चाहिए अगर हमें जीवित रहना और फलना-फूलना है। यह हम सभी पर निर्भर है कि हम पर्यावरण की रक्षा के लिए कार्रवाई करें और यह सुनिश्चित करें कि यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए स्वस्थ और टिकाऊ बना रहे। अपने कार्बन पदचिह्न को कम करके, कम प्लास्टिक का उपयोग करके, और प्राकृतिक आवासों को संरक्षित करके, हम यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं कि आने वाले वर्षों में पर्यावरण स्वस्थ और जीवंत बना रहे।



परीक्षा के लिए समय का प्रबंधन कैसे करें

- अर्चित शेषुंडे

जब आपकी परीक्षा होती है, तो अपने समय का बुद्धिमानी से उपयोग करना वास्तव में महत्वपूर्ण होता है। इसका अर्थ है अध्ययन के लिए एक ऐसी योजना होना जो आपको सबसे अधिक पूरा करने और परीक्षा में अच्छा करने में मदद करे। यदि आप अपने समय का सदुपयोग नहीं करते हैं, तो आप चिंतित महसूस करेंगे या परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएंगे। परीक्षा के दौरान अपने समय का बुद्धिमानी से उपयोग करने में आपकी मदद करने के लिए यहां कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं। परीक्षा में अच्छा करने के लिए आपको एक योजना बनाने की जरूरत है। सबसे पहले, शेड्यूल देखें कि परीक्षाएँ कब होती हैं और कितनी देर तक चलती हैं। फिर, यह पता करें कि आपको किन विषयों का अधिक अध्ययन करने की आवश्यकता है।

प्रत्येक दिन या सप्ताह के लिए विषयवार एक शेड्यूल बनाएँ ताकि आपके पास हर विषय का अध्ययन करने के लिए पर्याप्त समय हो। सुनिश्चित करें कि आपके पास हर विषय के लिए पर्याप्त समय है। जब आपकी परीक्षा हो, तो यह तय करना महत्वपूर्ण है कि कौन से विषय आपके लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। इस तरह, आप अपने अध्ययन के समय की बेहतर योजना बना सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आप उन चीजों पर ध्यान केंद्रित करें जो सबसे ज्यादा मायने रखती हैं।

हर दिन शारीरिक गतिविधि करना महत्वपूर्ण है, ठीक वैसे ही जैसे हर दिन एक ही समय पर पढ़ना महत्वपूर्ण है ताकि आपका मस्तिष्क जान सके कि कब ध्यान केंद्रित करना है। जब आप सीख रहे हों, तो यह महत्वपूर्ण है कि आप महत्वपूर्ण सूचनाओं को सावधानीपूर्वक और सही - सही लिखें। इससे आपको चीजों को बेहतर ढंग से याद रखने में मदद मिलेगी और बाद में परीक्षाओं के लिए अध्ययन करना आसान हो जाएगा। हर दिन एक निश्चित समय के लिए ब्रेक लेना और आराम करना महत्वपूर्ण है। सुनिश्चित करें कि आप पर्याप्त नींद लें ताकि आपका मस्तिष्क शांत और तरोताजा महसूस कर सके। अगर आपको स्कूल में किसी चीज़ से परेशानी हो रही है, तो आप अपने शिक्षक या दोस्तों से मदद माँग सकते हैं।

जब आप फंस जाते हैं या आगे बढ़ने में दिक्कत हो रही हो तो मदद माँगना स्कूल में अच्छा प्रदर्शन करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। यदि आप परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करना चाहते हैं तो अपने शरीर की देखभाल करना और स्वस्थ रहना महत्वपूर्ण है, अर्थात् व्यायाम करना, स्वस्थ भोजन करना और अपना शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखना। जो आपको तनाव महसूस न करने में मदद करें। आप जो हैं उस पर गर्व करना और अपनी भावनाओं और कार्यों पर नियंत्रण रखना वास्तव में महत्वपूर्ण है। याद रखें कि आप महान कार्य करने में सक्षम हैं। यदि आप इन चरणों का पालन करते हैं, तो आप परीक्षा के दौरान बुद्धिमानी से अपने समय का उपयोग कर सकते हैं। इससे आपको अच्छी तरह से अध्ययन करने और परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने में मदद मिलेगी।



पर्यावरण और इसके संरक्षण की आवश्यकता

- गौरांगी राणासरिया

पर्यावरण पृथ्वी पर सभी संभावित अस्तित्व का मूल स्रोत है। हालाँकि, हाल के वर्षों में पर्यावरण का अत्यधिक दोहन किया गया है, जिसके कारण पर्यावरण की स्थिति दिन-ब-दिन खराब होती जा रही है। वायु, जल और भूमि का प्रदूषण, खनन, औद्योगीकरण, आधुनिक शहरीकरण, वनों की कटाई, रासायनिक अपशिष्टों का छोड़ना और लैंडफिल कुछ ऐसे प्रमुख कारक हैं जो पर्यावरण की क्रमिक गिरावट का कारण बनते हैं।

वन्य जीवों की रक्षा और विभिन्न प्रजातियों के संरक्षण के लिए पर्यावरण को संरक्षित करना आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन की विनाशकारी गति के साथ, पर्यावरण के प्रदूषण और शोषण के परिणामस्वरूप पर्यावरण को किसी और नुकसान से बचाने के तरीके खोजना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। पर्यावरण को उसकी मूल स्थिति में वापस लाना गंभीर रूप से महत्वपूर्ण है और यही एकमात्र समाधान है। एक सामान्य लक्ष्य की दिशा में काम करना पर्यावरण को और अधिक नुकसान से बचाने का सबसे आसान और तेज़ तरीका होगा। बान की मून के अनुसार, "हमारे ग्रह को बचाना, लोगों को गरीबी से बाहर निकालना, आर्थिक विकास को आगे बढ़ाना... ये एक ही लड़ाई हैं।

हमें जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी, ऊर्जा की कमी, वैश्विक स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और महिला सशक्तिकरण के बीच बिंदुओं को जोड़ना होगा। एक समस्या का समाधान सभी के लिए समाधान होना चाहिए।" हमें इसी पर कार्य करना है और आगे देखना है - बिंदुओं को खोजना, उन्हें जोड़ना और समाधान प्रदान करना।

दुनिया के नेता पर्यावरण के तेजी से क्षरण को कम करने के लिए काम कर रहे हैं और संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे संगठन हैं जो जागरूकता पैदा करने और लोगों को पर्यावरण की समस्याओं को रोकने के लिए कार्रवाई करने के लिए पहल करते हैं। इनमें से कुछ पहलों में 2019 सतत विकास शिखर सम्मेलन, 2019 जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन, सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा, पेरिस समझौता और कई अन्य कार्यक्रम शामिल हैं जिनमें नदी संरक्षण, वनीकरण, तटीय प्रबंधन, आर्द्रभूमि संरक्षण आदि शामिल हैं। जबकि ये सभी उपाय कार्रवाई में हैं, व्यक्तियों को भी पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए कदम उठाने के लिए बाध्य किया जाता है, जिसका हर कोई एक हिस्सा है। सभी के प्रयासों से हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि इन सभी से निश्चित रूप से फर्क पड़ेगा और पर्यावरण को स्वस्थ और धारणीय बनाने में मदद मिलेगी।



इंटरनेट: लोगों को जोड़ता और बाँटता है

- सान्वी शेटी

इंटरनेट एक आकर्षक आविष्कार है जो पहली बार 1983 में अस्तित्व में आया था। तब से हम एक दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं, जानकारी प्राप्त करते हैं और व्यापार करते हैं, यह मौलिक रूप से बदल गया है। इसने दुनिया भर के लोगों को एक दूसरे के साथ संबंध बनाने और करीब लाने में मदद की है, जो पहले अकल्पनीय था। इंटरनेट में हमारे समाज को जोड़ने और विभाजित करने की क्षमता है।

इंटरनेट की बदौलत अब लोगों के बीच विश्वव्यापी संबंध संभव हो गए हैं। व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने उपयोगकर्ताओं को दूर दराज़ के दोस्तों और परिवार के सदस्यों के साथ संवाद करना संभव बना दिया है, साथ ही उन्हें नए लोगों से मिलने और नए समुदायों का निर्माण करने का अवसर भी दिया है। इसने लोगों के लिए अपने हितों को साझा करने वाले अन्य लोगों के साथ जुड़ना, सार्थक चर्चा और तर्क करना आसान बना दिया है।

वैश्विक ग्राहकों तक पहुँचने के लिए व्यवसायों की क्षमता ने ई-कॉमर्स और ऑनलाइन मार्केटिंग के विस्तार को बढ़ावा दिया है। नतीजतन, अब लोगों के पास अपनी खुद की कंपनियां शुरू करने और दुनिया भर के ग्राहकों के साथ बातचीत करने के अधिक विकल्प हैं। लोग अब शिक्षा और रोजगार के उन अवसरों तक पहुँच सकते हैं, जिन तक इंटरनेट के बिना उनकी पहुँच नहीं हो सकती थी।

फिर भी, इन लाभों के बावजूद, इंटरनेट ने समाज में दरार भी पैदा की है। इंटरनेट ने अभद्र भाषा, ट्रोलिंग, उत्पीड़न और साइबरबुलिंग के लिए एक मंच के रूप में काम किया है — जो विभिन्न नस्लीय, धार्मिक और जातीय समूहों यहाँ तक कि व्यक्तियों के बीच तनाव और दरार को बढ़ा सकता है। लोग अब अधिक आसानी से प्रचार और गलत जानकारी साझा कर सकते हैं, जिससे गलत संदेश का फैलना और हिंसा हो सकती है। इंटरनेट का उपयोग कभी - कभी हिंसा भड़काने और गलत विचारों को फैलाने के लिए भी किया जाता है।

अंत में, इंटरनेट एक दोधारी तलवार है — जिसमें लोगों को जोड़ने और अलग करने की शक्ति है। इसने लोगों के बीच नई दरारें और तनाव पैदा किया है, साथ ही साथ लोगों को कई तरह से करीब लाया है। इंटरनेट की क्षमता का पूरी तरह से उपयोग करने के लिए, अधिक समावेशी और न्यायसंगत दुनिया बनाने के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम जागरूक और संवेदनशील रहें, तभी हम डिजिटल क्षेत्र में आगे बढ़ना जारी रख सकते हैं।





वैज्ञानिक तथ्य और व्यायाम के लाभ

- रुमेसा शेख

हमारे पेशेवर जीवन में काफी अड़चनें आ गई हैं और हममें से अधिकांश लोग घरों से काम कर रहे हैं, इसके बावजूद यह जरूरी है कि हम अपने लिए एक रूटीन तय करें और उस पर कायम रहें। दिनचर्या सुनिश्चित हो तो इससे तनाव घटता है और मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है।

कई बार हम आलसी हो जाते हैं और व्यायाम करना बंद कर देते हैं क्योंकि हमें लगता है कि यह हमारे जीवन में कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं दिखा रहा है लेकिन व्यायाम के लाभों पर एक नज़र डालें तो व्यायाम के कई दीर्घकालिक लाभ हैं।

व्यायाम के लाभ पर कुछ तथ्य

- यह टाइप 2 मधुमेह को रोकने में मदद करता है।
- यह अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाने और खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करता है।
- अस्थमा वाले लोगों में वायुमार्ग की सूजन को कम करता है।
- योग जैसे व्यायाम हृदय प्रणाली को बनाए रखने और हृदय रोग के जोखिम को कम करने में मदद करते हैं।
- नियमित व्यायाम से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।
- एरोबिक व्यायाम स्मरण शक्ति बढ़ाने में मदद करता है।

मेरी प्यारी माँ

- ब्लेसि मेहता

माँ मेरी है सबसे प्यारी,
वही दुनिया में सबसे न्यारी।
उन्होंने मुझे चलना सिखाया,
उन्होंने मुझे पढ़ाया लिखाया।

वही मेरा प्रोत्साहन है,
उन्होंने मेरा पोषण किया है।
उनकी सुंदरता पुष्प समान,
वही दुनिया में सबसे महान।





समुद्री जीवन

- अनुष्का लाले

समुद्री जीवन वे पौधे, जानवर और अन्य जीव हैं जो समुद्रों या महासागरों के खारे पानी या तटीय मुहानों के खारे पानी में रहते हैं। मौलिक स्तर पर, समुद्री जीवन पृथ्वी की प्रकृति को प्रभावित करता है। समुद्री जीवन तटरेखाओं की रक्षा करता है, और कुछ समुद्री जीव नई भूमि बनाने में भी मदद करते हैं (उदाहरण के लिए कोरल बिल्डिंग रीफ)।

अधिकांश जीवन रूपों का विकास प्रारंभ में समुद्री आवासों में हुआ। महासागर ग्रह पर लगभग 90% रहने की जगह प्रदान करते हैं। शुरुआती कशेरुक मछली के रूप में दिखाई दिए, जो विशेष रूप से पानी में रहते हैं। इनमें से कुछ उभयचरों में विकसित हुए, जो अपने जीवन का कुछ भाग जल में और कुछ भाग भूमि पर व्यतीत करते हैं। उभयचरों का एक समूह सरीसृप और स्तनधारियों में विकसित हुआ और प्रत्येक के कुछ उपसमुच्चय समुद्र में समुद्री साँप, समुद्री कछुए, सील, मैनेट और व्हेल के रूप में वापस आ गए। केल्व और अन्य शैवाल जैसे पौधों के रूप पानी में उगते हैं और कुछ पानी के नीचे के पारिस्थितिक तंत्र के आधार हैं।

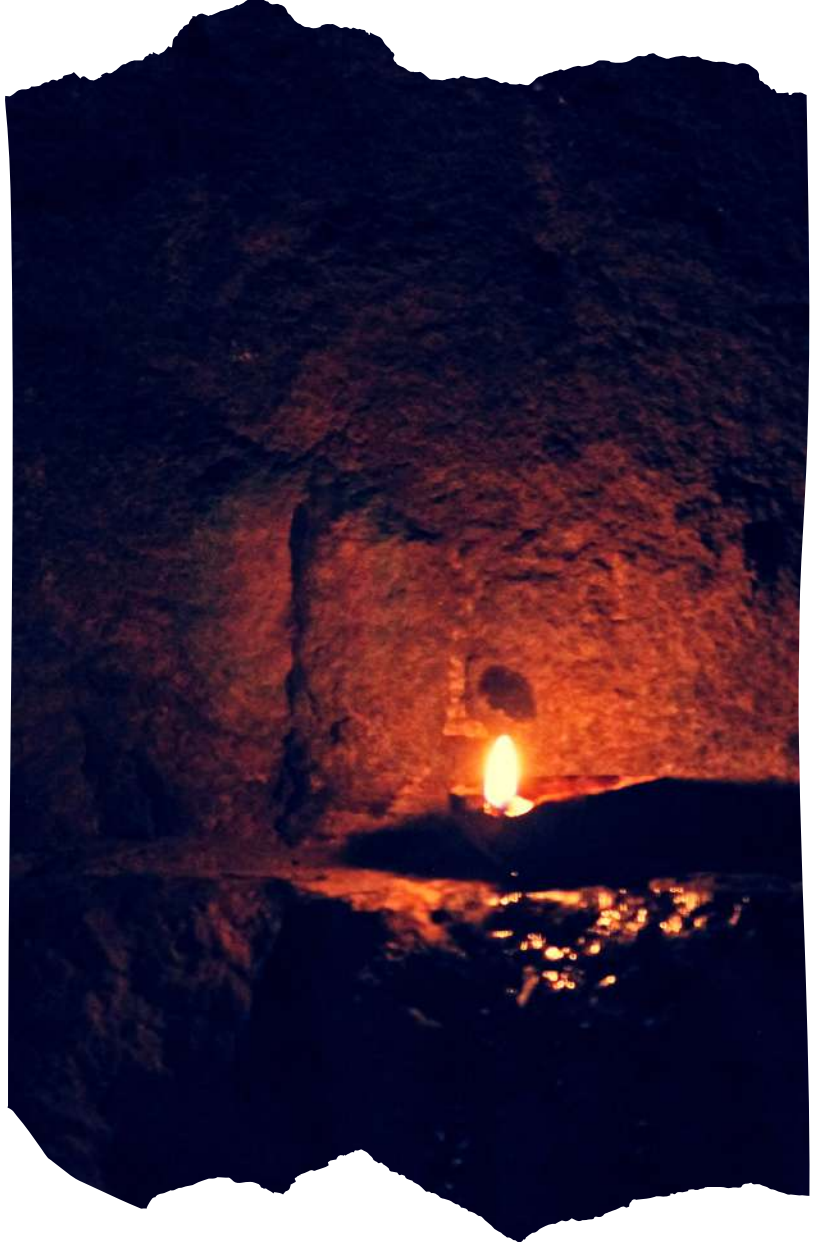
200,000 से अधिक समुद्री प्रजातियों का दस्तावेजीकरण किया गया है। समुद्री प्रजातियों का आकार सूक्ष्म से लेकर फाइटोप्लांकटन तक होता है, जो 0.02 माइक्रोमीटर जितना छोटा हो सकता है, ब्लू व्हेल जैसे विशाल सीतासियों तक- सबसे बड़ा ज्ञात जानवर, जिसकी लंबाई 33 मीटर (108 फीट) तक होती है। समुद्री सूक्ष्मजीव, जिनमें प्रोटिस्ट और बैक्टीरिया और उनसे जुड़े वायरस शामिल हैं। विभिन्न प्रकार से अनुमान लगाया गया है कि वे कुल समुद्री बायोमास का लगभग 70% या लगभग 90% हैं।



डर के आगे जीत है

- जगन्नाथ त्रिपाठी

दो दोस्त किसी काम से एक गाँव की तरफ जा रहे थे। चलते - चलते बहुत रात हो जाती है और उनके रास्ते में एक घना जंगल आ जाता है। पहला दोस्त अपने दूसरे दोस्त से बोलता है, "हमें यहीं सो जाना चाहिए क्योंकि बहुत रात हो चुकी है और हमें भी कुछ आराम की जरूरत है।" दूसरे दोस्त ने इस जंगल के बारे में बहुत डरावनी कहानियाँ सुन रखी थीं, तो उसने पहले दोस्त को कहा, "इधर भूत प्रेत भटकते हैं। यहाँ सोना उचित नहीं है।" पहला दोस्त उसकी बातों को न सुनते हुए एक गुफा में बैठ जाता है। दूसरा दोस्त डर के मारे थर - थर काँपते हुए कहता है, "अरे ! ये तो बहुत डरावनी गुफा है।" पहला दोस्त हँसते हुए बोलता है, "इस गुफा से क्या डरना।" तभी दूसरा दोस्त बोलता है, "अरे ! सुना है इधर भूत प्रेत भटकते हैं।" फिर पहला दोस्त हँसते हुए कहता है, "भूत - प्रेत सब फालतू की बात है।" ऐसी चर्चा करते हुए दोनों दोस्त सो जाते हैं। सोने के कुछ ही समय के बाद दूसरा दोस्त अचानक हड़बड़ाते हुए उठा और चिल्लाने लगा, "दोस्त, दोस्त मुझे बचाओ।"



पहला दोस्त उठकर बोला, "भाई, क्यों चिल्ला रहे हो ? पागल हो गए हो क्या ?" दूसरा दोस्त बोला, "मुझे सपने में परछाइयाँ दिख रही हैं। वह मेरे पास धीरे - धीरे आ रही है।" पहला दोस्त दूसरे दोस्त से बोला, "यह तुम्हारा भ्रम है। सो जाओ और मुझे भी सोने दो।" दूसरा दोस्त फिर सोचा और परछाईयाँ फिर उसके सपने में आईं और वो फिर घबराकर उठ गया। फिर बोलने लगा कि वो परछाईयाँ मेरे पीछे पड़ी हुई हैं। मुझे बचाओ। पहला दोस्त बोला कि यदि वो परछाई दुबारा आई तो उसके सामने बोलना, "मैं तुमसे नहीं डरता। सामने आओ। तुम मुझे डरा नहीं पाओगे।" दूसरा दोस्त फिर सो गया और फिर वो परछाईयाँ आईं लेकिन इस बार उसने न डरते हुए उस परछाई को वही बोला जो उसके दोस्त ने बोलने को कहा था। अचानक उसे पता चला कि वो परछाईयाँ पीछे जाने लगीं और कुछ देर के बाद वो पूरी तरह से गायब हो गईं। अगले दिन जब वे दोनों उठे दूसरे दोस्त ने पहले दोस्त को बोला जो तुमने बोला था मैंने वही बात उस परछाई को बोला और वो चली गयी। फिर दोनों तय दिशा में गाँव की तरफ आगे बढ़ने लगे।

मेरा पहला प्यार

- अक्षिता पारेख



प्यार की परिभाषा सबके लिए अलग होती है। मेरे लिए मेरा प्यार मतलब है विश्वास और मैं यह विश्वास रखती हूँ 'मेरी माँ' में। माँ एक ऐसा शब्द है जो हर किसी के चेहरे पर मुस्कान लाता है। मेरी माँ ही मेरा पहला प्यार है। उनके जैसा और कोई नहीं। मेरी माँ का मेरे जीवन में बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने मेरे लिए जो किया है वह अमूल्य है। माँ घर में सबसे पहले उठती है ताकि हमारा दिन शांति से गुज़र सके। हमारा खाना बनाती है ताकि हमें शुद्ध और पौष्टिक खाना मिल सके। इन सबके बाद वह नौकरी भी करती है ताकि घर खर्च चलाने में आसानी हो। इसके बाद भी माँ जो अपना पूरा समय घर में बिताती है उसे देखकर उनको मेरा सलाम है। क्योंकि उनसे ज्यादा सहनशील मैंने किसी और को नहीं देखा है। नौ महीने किसी को कोख में रखना आसान काम नहीं होता। मगर हर माँ यह करती है और खुशी - खुशी अपना जीवन त्याग देती है। मैं तो हर माँ से कहना चाहती हूँ कि कभी - कभी आप अपने लिए भी थोड़ा सोच लिया करें, थोड़ा खुद के लिए भी जी लिया करें। क्योंकि आपका जीवन भी महत्वपूर्ण है। मेरी तरफ से मैं हर 'माँ' को सलाम करती हूँ।

'जिसके पास माँ होती है, उसके ऊपर, ऊपर वाले की महर होती है।'

उम्मीद का सूरज

- इज़ाया बिबिन

सूरज से हम सभी अच्छी तरह वाकिफ़ हैं जिसने हमें दिन और रात में फ़र्क करना सिखाया है और आने वाली हर किरण के साथ एक उम्मीद रखना सिखाया है।

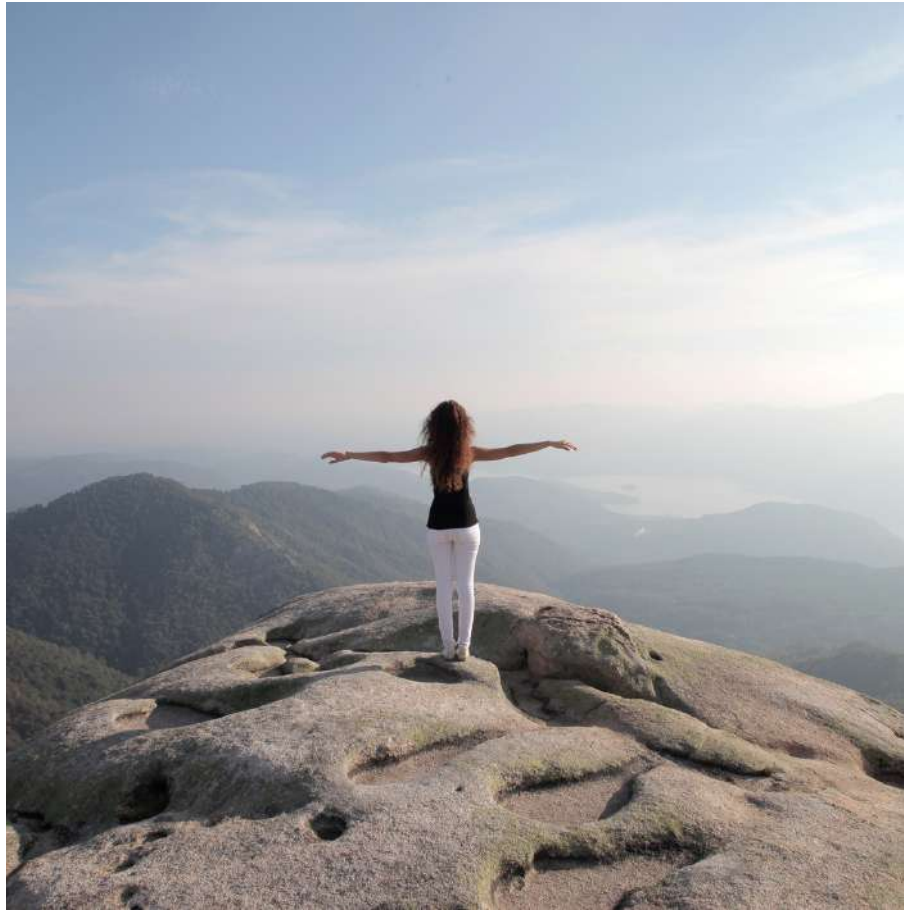
हम सभी ज्यादातर उगते हुए सूरज को सलाम करते हैं जो कि हमारे लिए बहुत ही जरूरी माना गया है। इसलिए सूरज को सदैव प्रेरणा की दृष्टि से देखना चाहिए।



आज़ादी

- आर्य पटेल

पंछी हैं कैद अगर,
तो उड़ने में कर मदद तू।
रात है काली अगर,
दीया जलाकर रोशन कर तू।
बीत गए कई साल रूढ़िवादी विचारों में उलझकर,
सुलझा, मन के भाव तू सुलझा।
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा,
सबके जीवन का कर सम्मान तू।
तोड़ दे दीवारें सारी,
आगे बढ़ विजयी राह पर।
अगर तू अब भी डर में खोया,
तो याद कर,
उन वीरों ने क्या पाया,
जिन्होंने आज़ादी की खातिर जीवन गंवाया।
उठ जा तू, छू ले आसमान,
आज़ादी पर है सब का, बराबर का हक।



माँ

- हेत्वी पटेल

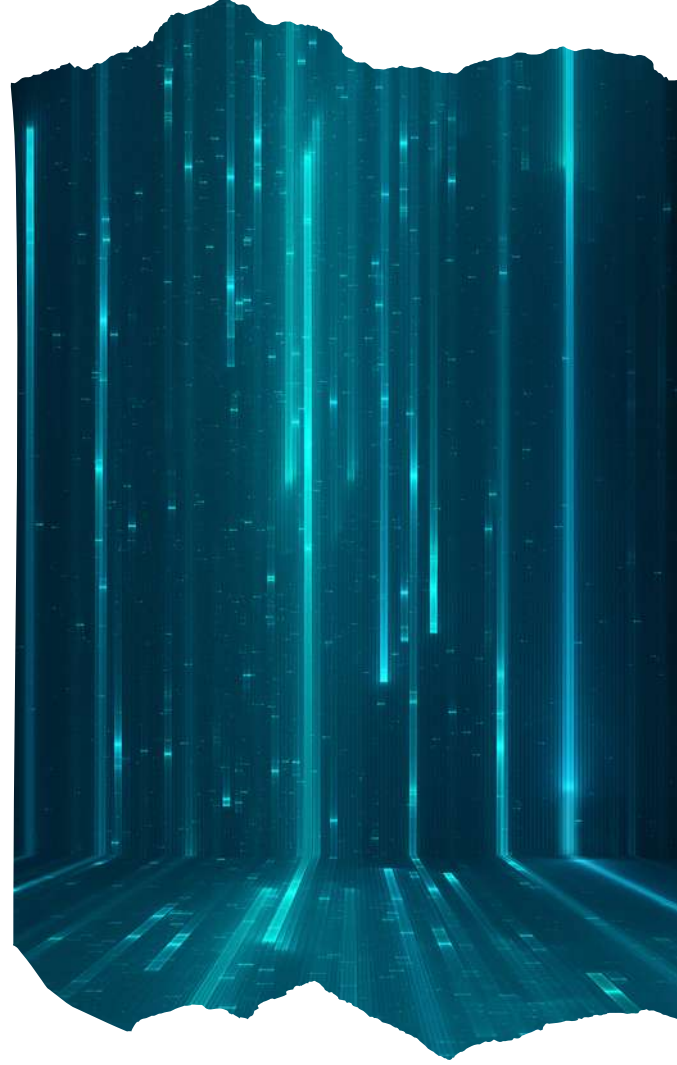
ममता को जिसे शब्दों में न बयान किया जा सके,
वो होती है माँ;
बिन बताए जो दिल के तारों से समझ जाए
आपके मन की बात, वो होती है माँ;
दुःख हो या सुख, जो आपके साथ खड़ी रहे,
वो होती है माँ;
सब कुछ सहकर भी जो अत्यंत प्रसन्न दिखे,
वो होती है माँ;
अपने बच्चे के आँसुओं को देखकर
जो खुद रोए, वो होती है माँ;
जिसकी दुआओं से हो सकता है असंभव भी संभव,
वो होती है माँ;
जिसके संग लगे जीवन की यात्रा अद्भुत सपनों - सी,
आखिर वही तो होती है
ईश्वर का सबसे अमूल्य सृजन 'माँ' !



जैसे को जैसा

- अद्विका सचान

कुछ होते हैं मूर्ख, कुछ बनते हैं मूर्ख
 कुछ होते हैं मूर्ख, कुछ बनते हैं मूर्ख,
 और कुछ यहाँ दूसरों को बनाते हैं मूर्ख।
 कुछ अपने लाभ के लिए दूसरों को उल्लू बनाते हैं
 किंतु अंत में स्वयं ही उल्लू बन जाते हैं।
 एक थे भोलेराम, दूसरे थे चतुरराम
 भोले थे भोले, बड़ी सरलता से मूर्ख बन जाते थे।
 चतुर थे चालाक, वह दूसरों को मूर्ख बनाते थे।
 एक बार दोनों को एक ही कन्या से हो गया प्रेम,
 अब लड़की थी सुशील, दोनों के मन को भा गई,
 और दोनों ने तय किया, उसी से विवाह बनाएंगे।
 चतुर था सयाना, भोले के मन को समझ गया,
 और उसे अपने मार्ग से हटाने का मार्ग भी निकाल लिया।
 चतुर ने कहा, "भोले तू इस कन्या के योग्य नहीं,
 कौन - सा मुँह लेकर इस कन्या के सामने जाएगा,
 जाओ लिखो महाग्रंथ कोई, पहले बनो राजकवि,
 तब ही तो, तुम इस कन्या को पाओगे"।
 बस, भोले बेचारे महाग्रंथ लिखने चले गए,
 और इधर चतुर ने उस कन्या से विवाह तय कर लिया।
 विवाह में अभी कुछ दिन शेष था,
 इधर चतुर खुशी - खुशी विवाह के दिन गिन रहा था,
 दूसरी ओर भोला महाग्रंथ की रचना कर रहा था।
 अचानक भाग्य ने पलटा खाया, भोले के परिश्रम ने रंग दिखलाया।
 राजा को भोले का महाग्रंथ भा गया,
 और राजा ने भोले को राजकवि का पद दे दिया।
 कन्या ने सुना राजकवि हुआ भोला, उसने भोले को अपना वर चुन लिया।
 चतुर की चतुराई काम न आई, वह केवल हाथ मलता ही रह गया।।

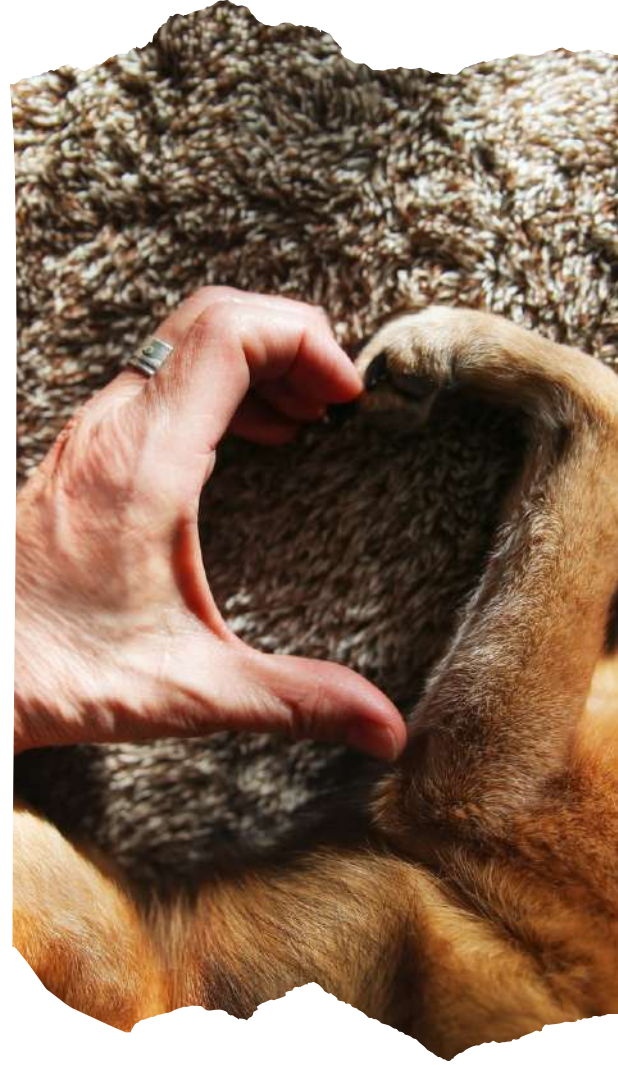


इंसानियत जगाओ, इंसान बनो

- भद्रा लक्ष्मी सजित द्वारा लिखित

- हेत्वी पटेल द्वारा अनुवादित

जब तक कुछ हमारे समझ से ताल्लुकात ना रखता हो,
हम उसे समझने का प्रयास ही नहीं करते।
जब तक हमें मजबूर ना किया जाए,
हम सुनने का प्रयास ही नहीं करते।
जब तक हम उससे घिर ना जाएं
हम उसे देखने का प्रयास ही नहीं करते।
जब तक हम खुद घायल ना हो,
हम घायल होने के दुख और दर्द को समझने का प्रयास ही नहीं करते।
जब तक हमें सोचने पर विवश नहीं किया जाता,
हम कभी सोचने का प्रयास ही नहीं करते।
बदलाव लाने का विचार मन में तभी उत्पन्न होता है
जब अनुचित स्वयं के साथ हो रहा हो,
किसे क्या फर्क पड़ता है, अगर कोई और मुसीबत में हो?
क्योंकि यही तो हमने सीखा है और यही तो हमें सिखाया गया है,
दूसरों के दुख और विलाप को तब तक नज़रअंदाज़ कीजिए
जब तक वह हमसे और हमारे अपनों से ताल्लुक ना रखता हो।
समझिए, सोचिए, देखिए, सुनिए, व्यक्त कीजिए,
ना सिर्फ़ तब जब खुद को कष्ट हो,
ना सिर्फ़ तब जब हमारे अपनों को कष्ट हो,
तुम्हारी मदद की दरकार है हर अजनबी को,
अज्ञात जीव और समस्त मानवजाति को,
क्योंकि वे ही तो तुम्हारे परिवार और साथी हैं,
अपनी जीवन अवधि समाप्त होने से पूर्व जिन्हें तुम बचाना चाहते हो,
आखिर तभी तो तुम अपने अंदर की इंसानियत को जगा पाओगे!
आखिर तभी तो तुम इंसान बन पाओगे !



माँ

- अस्मा जावेद शेख

ऊपर जिसका अंत नहीं
 उसे 'आसमाँ' कहते हैं
 इस जहाँ में जिसका अंत नहीं
 उसे 'माँ' कहते हैं।
 उसके रहते जीवन में
 गम नहीं होता
 दुनिया साथ दे ना दे
 पर माँ का प्यार कभी कम नहीं होता।
 माँ हैं मोहब्बत का नाम
 माँ को हज़ारों सलाम।
 कभी शिक्षिका बनकर ज्ञान दिया तो
 कभी दोस्त बनकर साथ में खेली वो
 साथ में रहकर सुलझाया उसने
 मेरी ज़िंदगी की हर पहली को।
 हज़ारों बूँदें चाहिए समंदर बनाने के लिए
 माँ अकेली ही काफी है
 बच्चों की ज़िंदगी जन्नत बनाने के लिए।
 सारी दुनिया में एक तू ही
 कमियों को नज़रंदाज़ करती हैं माँ
 मतलब के बगैर नहीं पूछता कोई हाल-चाल भी
 तेरे सिवा किसी और को मेरी फिकर होती है कहाँ
 सबने बताया आज 'माँ' का दिन हैं
 कौन बताएगा कि वो कौन - सा दिन है
 जो 'माँ' के बिन है।



आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: भविष्य का खतरा?

- कीर्तना नायर

ए.आई. के गॉडफादर, जेफ्री हिंटन ने हाल ही में गूगल छोड़ दिया और चेतावनी दी कि ए.आई. इंसानों से ज्यादा स्मार्ट बन सकता है और उनकी जगह ले सकता है। वास्तव में क्या यह इतना बड़ा खतरा है जो इसके गॉडफादर को भी चिंतित करता है?

आइए 'ए.आई.' या 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' शब्द का अर्थ समझते हैं। सरल शब्दों में, यह बुद्धिमत्ता या क्षमताएं हैं, जो आमतौर पर मनुष्यों से जुड़ी हुई हैं, जो मशीनों द्वारा प्रदर्शित की जाती हैं। आज की दुनिया में, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हर जगह है - चैटबॉक्स, गूगल मैप्स, फेशियल रिकॉग्निशन सिस्टम, एलेक्सा जैसे स्मार्ट असिस्टेंट आदि। यह क्रांति का दौर है - हमारे जीवन को आसान बनाने के लिए नई बुद्धि विकसित की जा रही है और उद्योग दिन-ब-दिन तेजी से विकसित हो रहे हैं। इसके कई लाभ हैं, लेकिन कुछ का मानना है कि ये लाभ केवल अल्पकालिक हैं और ए.आई. धीरे-धीरे मानवता से आगे निकल जाएगा। लेकिन 'मानवता को पछाड़ने' का क्या अर्थ है?

रोबोट तानाशाह बन रहे हैं और साइबोर्ग सेनाएं इंसानों से उनके लिए काम करवा रही हैं, ये किताबों और फिल्मों की साइंस फिक्शन हैं। यथार्थवादी दृष्टिकोण से, इसका अर्थ है बड़े पैमाने पर नौकरी का नुकसान, स्वायत्त हथियार, व्यापक सामाजिक-आर्थिक असमानता, मशीनों पर अत्यधिक निर्भरता और मानव बुद्धि को उस बिंदु तक बेहतर प्रदर्शन करना जहाँ इसकी अब आवश्यकता नहीं है।

ए.आई. वर्तमान में कई उद्योगों और व्यवसायों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और अब यह हमारी जीवन शैली का एक अनिवार्य हिस्सा है। उम्मीद की जाती है कि यह पूरी तरह से नौकरियाँ ले लेगा और बायोटेक्नोलॉजी की मदद से यह ऐसी नौकरियाँ भी ले सकता है, जो भावनाओं जैसे मानवीय कौशल पर निर्भर करती हैं। युवल नोआह हरारी ने अपनी किताब '21वीं सदी के लिए 21 सबक' में बताया है कि नौकरियों की कमी समाज में एक 'बेकार' वर्ग पैदा कर सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि कोई भी निश्चित रूप से नहीं जान सकता है कि मशीन लर्निंग और ऑटोमेशन का भविष्य में विभिन्न व्यवसायों पर किस तरह का प्रभाव पड़ेगा। यद्यपि ये विश्वास भविष्य में बहुत दूर प्रतीत होते हैं, प्रौद्योगिकी विकास की वर्तमान गति को देखते हुए, जितना हम सोचते हैं, उससे कहीं अधिक जल्दी होने की संभावना है।

दुनिया प्रौद्योगिकी आधारित भविष्य की ओर बढ़ रही है। ए.आई. की प्रगति को रोकना विकास का एक व्यवहार्य समाधान नहीं है, क्योंकि इसका अर्थ है रोबोटिक्स की अपार क्षमता को छोड़ देना। इसलिए, हमें एक नए युग का स्वागत तो करना चाहिए, लेकिन क्या ए.आई. मानवता के लिए खतरा है? - हाँ, अगर इसे गलत तरीके से लागू किया जाता है तो यह खतरे से खाली नहीं है। हमें मानवीय निरीक्षण के साथ स्वायत्तता को संतुलित करना चाहिए।

प्रौद्योगिकी चमत्कार कर सकती है, जब इसे अच्छे कारणों से बनाया जाता है और साथ ही यह गलत हाथों में जाने से बहुत नुकसान कर सकती है। आखिर हम इंसान ही हैं जो ए.आई. को बनाते हैं 'खुद को सुविधाजनक बनाने के लिए'। हम भविष्य के निर्माता हैं और यह हमें तय करना है कि आने वाली पीढ़ी के लिए भविष्य कैसा होना चाहिए।

प्रकृति की सुंदरता, लुप्त होती हुई

- हेत्वी पटेल

प्रकृति की है बड़ी ही अद्भुत महिमा
प्रकृति की है बड़ी ही अनूठी सुंदरता
लेकिन हमारे पास समय ही तो नहीं है
इस अद्भुत प्रकृति की सुंदरता को निहारने का।

चिड़ियों की वह चहचहाहट
हवा की वह फुसफुसाहट
पत्तों की वह सरसराहट
लेकिन हमारे पास समय ही तो नहीं है
प्रकृति के इन मधुर गीतों को सुनने का।

नभ को छूते वह लंबे पेड़
ऊँचे गगन से दोस्ती करते वह पक्षी
फूल खिलते जो रंग बिरंगी
लेकिन हमारे पास समय ही तो नहीं है
ज़रा ठहर कर इनकी प्रशंसा करने का।

जब बढ़ता धरती का तापमान
तभी हम ढूँढते इसका समाधान
लेकिन मिलता हमें सिर्फ़ और सिर्फ़ मौन
जीना है अगर तो क्यों नहीं करते प्रकृति का सम्मान।।



भ्रष्टाचार मुक्त भारत - विकसित भारत

- आयुष पात्रो

भारत को विभिन्न स्तरों पर भ्रष्टाचार की समस्या का सामना करना पड़ता है। यह समस्या हमारे देश को आंतरिक रूप से खा रही है। यही सही समय है जब हम सभी को हमारे देश पर भ्रष्टाचार के नकारात्मक प्रभाव का अहसास होना चाहिए। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए हमें सबसे पहले भ्रष्टाचार की जड़ों को खत्म करना होगा।

भ्रष्टाचार का अर्थ:

'भ्रष्टाचार' शब्द का प्रयोग आमतौर पर रोजमर्रा की भाषा में किया जाता है, इसलिए हममें से अधिकांश इससे परिचित हैं। भ्रष्टाचार की परिभाषा क्या है? हमारे मन में तरह-तरह के चित्र उभर कर आते हैं। जिसका आचरण भ्रष्ट है वही भ्रष्टाचार कहलाता है। अमेरिका के 46 वे राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा, "भ्रष्टाचार एक और प्रकार का अत्याचार है।" बयान के अनुसार, भ्रष्टाचार क्रूर और अत्याचारी सरकारी शासन के बराबर है।

भ्रष्टाचार का भारत पर प्रभाव :

भ्रष्टाचार के दुष्परिणामों पर निगाह डाली जाए तो यह अत्यंत भयावह और डरावने लगते हैं। इस व्यवस्था से उपजने वाले भारत में परिणाम निम्नलिखित हैं -

- 1) सार्वजनिक निर्माण कार्यों का स्तर घटिया होता है तथा अनेक बार ये कार्य केवल कागजों पर ही होकर रह जाते हैं।
- 2) योग्य और निष्ठावान व्यक्तियों को समुचित अवसर नहीं मिल पाता है।
- 3) गरीब व्यक्तियों के जीवन जीने के प्राकृतिक अधिकारों पर प्रतिकूल असर पड़ता है।
- 4) समाज में आर्थिक विषमता पनपती है। इससे गरीबी व अमीरी की खाई चौड़ी होती है।
- 5) काले धन का अंबार लगता है। इस कारण देश की अर्थव्यवस्था पंगु बन जाती है।
- 6) बेरोजगारी को बढ़ावा मिलता है। आम आदमी का सरकारी तंत्र पर विश्वास घटता है इससे जनहित के मुद्दों पर लोगों में असंतोष फैलता है।



भ्रष्टाचार मुक्त व विकसित भारत कैसे बनाए:

भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सरकार द्वारा भ्रष्टाचार विरोधी कड़े कानून व नियम बनाकर उस पर स्वयं व जनता को अमल करना होगा। भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए उपाय इस प्रकार है :

- 1) संसद व राज्य विधायिका द्वारा त्वरित गति से कार्य करने वाला कानून बनाया जाए। इंटरनेट के माध्यम से हो रहे भ्रष्टाचार को रोकने की जरूरत है।
- 2) उन सभी लोगों पर सख्त कार्रवाई करें, जो देश-विदेश से भ्रष्टाचार में सहायता प्रदान करते हैं।
- 3) लोगों को सत्य के मार्ग पर चलने की शिक्षा के लिए प्रेरित किया जाए।
- 4) सार्वजनिक महत्त्व के पदों पर संदिग्ध आचरण वाले लोक सेवकों को पदस्थापित नहीं किया जाना चाहिए।
- 5) राजनीतिक दलों को मिलने वाले चंदे की पूरी तरह जाँच पड़ताल की जानी चाहिए।
- 5) विमुद्रीकरण प्रक्रिया में काला धन बाहर लाया जाना चाहिए।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत विकसित भारत निष्कर्ष:

इस समस्या का एकमात्र समाधान किया जाना चाहिए कि हमारे सभी नेता तथा उच्च पदाधिकारी अपने पदों का सदुपयोग जनता के कल्याण में करें। अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब हमारी एकता, अखंडता, राष्ट्रियता और स्वतंत्रता समाप्त हो जाएगी। हमें इसका खुलकर विरोध करना चाहिए ताकि हमारा देश उन्नतिशील और विकसित बन सके।

हम, इस देश के युवाओं को राजनीति में शामिल होकर और इसे सही दिशा देकर भ्रष्टाचार को पूरी तरह से खत्म करने की जिम्मेदारी निभानी होगी। बुराई व्यवस्था को नष्ट नहीं कर सकती, लेकिन बुराई को चुपचाप देखना उसे नष्ट जरूर कर सकता है।

देश के प्रधानमंत्री के इस जयघोष को साकार करना होगा -

“जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान”।





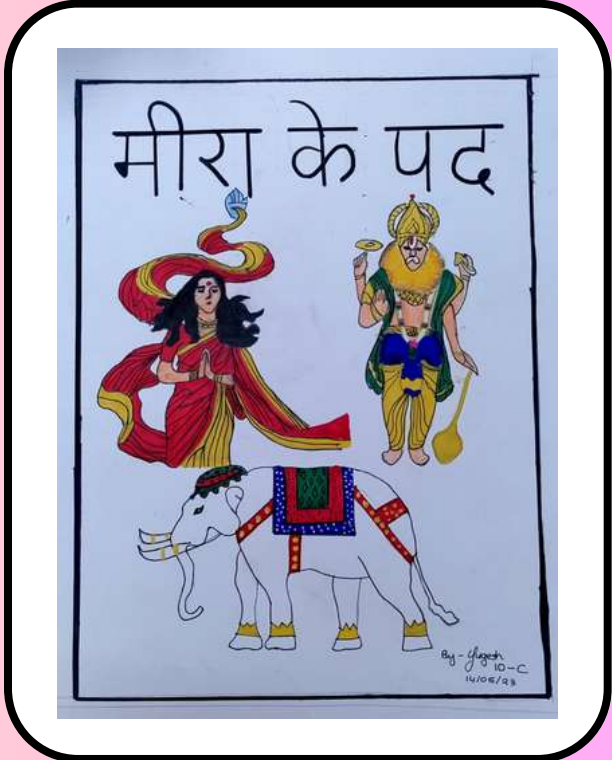
गार्गी गावडे



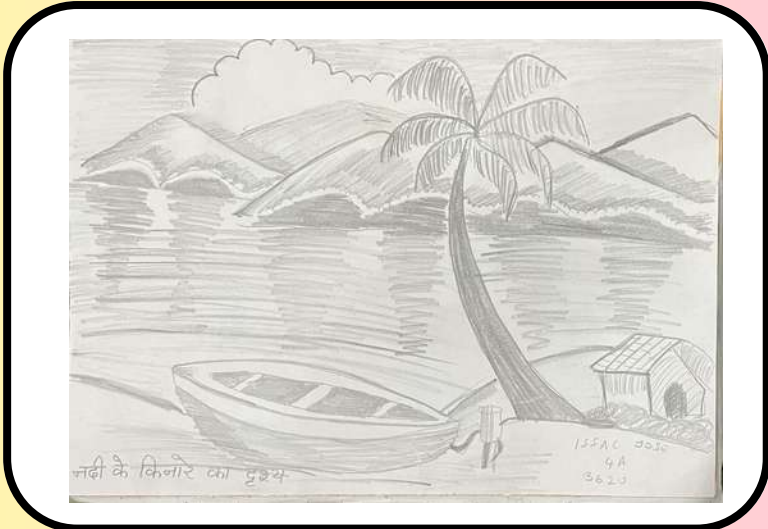
गंगा



अस्मि देशमुख



युगेश राजेश



आइसेक जोस



अनुभव वाणी

आशा

- सौम्या वि.एस.

आशा - एक जादुई शब्द है,
खुशी और आशावाद लाता है।

आशा एक विश्वास है,
सुबह के सूर्योदय की तरह।
उड़ने की ताकत देता है,
पक्षी के पंखों की तरह।

आशा हमें आगे बढ़ाता है,
इसे कभी गायब न होने दें।
हमेशा आशावादी रहें,
बेहतर जीवन जिएं।



परवरिश और सफलता

- पिकी रावत

आज कल हर माता-पिता अपने बच्चों को सबसे अच्छे स्कूल भेजने का प्रयास कर रहे हैं। माता - पिता अपने बच्चों को अच्छे अंक लाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। ये एक सफल बच्चे के आवश्यक मापदंड हैं। हम सभी इससे सहमत हैं। इन विचारों का पालन करके हम सफल डॉक्टर, इंजीनियर और अन्य तैयार कर रहे हैं।

हालाँकि, वर्तमान सामाजिक जीवन में हमें एक सफल डॉक्टर, सफल इंजीनियर होने के साथ - साथ ही एक अच्छा इंसान बनने की नितांत आवश्यकता है। ये सीख विद्यार्थियों को माता - पिता और शिक्षकों द्वारा दिया जाना चाहिए। हमें सफल होने के साथ - साथ यह भी सोचने की जरूरत है कि हमें अपने माता - पिता का ख्याल रखना चाहिए। एक अच्छा बच्चा होने का मतलब आमतौर पर करुणा, समझ, आत्म-अनुशासन और प्रशंसा जैसे गुणों का होना है। हमें भी अपने समाज के बारे में सोचने की जरूरत है और गलत कामों को बढ़ावा नहीं देना चाहिए। हमें अपने बच्चों को बड़ों का सम्मान करना और आज्ञा का पालन करना सिखाना चाहिए।

मेरी राय में, एक सफल बच्चे का पालन - पोषण करना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, एक अच्छा बच्चा बड़ा करना एक सफल बच्चे से ज्यादा बेहतर है।

मेरा अनुभव - युवा पीढ़ी को सीख

- आतिका खान

मैंने देखा है बच्चों को साथ खेलते हुए, आपस में बात करते हुए किस भाषा का प्रयोग करते हैं। मुझे अफ़सोस होता है कि आज का युवा ऐसी भाषा का प्रयोग करता है जिसे सुनना भी हमें अच्छा नहीं लगता। हम चार - दीवारी के अंदर अपने बच्चों को क्या सिखाते हैं यह बहुत मायने रखता है। क्या हमारी भाषा घर में ही खराब हो चुकी है ? क्या आम बातचीत में हम गालियों (अपशब्दों) का प्रयोग करने लगे हैं ? या सिर्फ दूसरों के सामने 'कूल' (cool) बनने के लिए ऐसी भाषा का प्रयोग करने लगे हैं।

बतौर माँ - बाप हमें अपने बच्चों को बताना जरूरी है कि हमारी संस्कृति में एक - दूसरे के प्रति आदर कितना महत्वपूर्ण है। हमें ध्यान देना चाहिए कि हमारा बच्चा जब अपने दोस्तों से बात कर रहा है तो वह किस प्रकार की भाषा का प्रयोग कर रहा है। जब वह ऑनलाइन गेम खेलता है तब कैसी भाषा का प्रयोग कर रहा है। जब भी महसूस हो कि आपके बच्चे की भाषा गलत दिशा में जा रही है, तो उसे उसी समय डाँटना या उसकी गलती का अहसास करवाना जरूरी हो जाता है। बच्चों की अच्छाई और उसके बेहतर भविष्य के लिए थोड़ा सख्त स्वभाव अपनाना भी कभी - कभी जरूरी हो जाता है।

सफलता के रहस्य

- सौम्या राजेश

"अच्छे व्यवहार से वे द्वार खुल जाते हैं जो सर्वोत्तम शिक्षा नहीं दे सकती।" - क्लेरेंस थॉमस।

एक छात्र के जीवन में उसका तौर तरीका ही तय कर देता है कि वह छात्र कितना आगे जाने वाला है। एक इंसान की आदत और तौर - तरीका उसकी सबसे बड़ी पहचान होती है, इसके साथ ही आदत और तौर - तरीका भविष्य को तय कर देता है।

समय और शिक्षा का सही उपयोग ही व्यक्ति को सफल बना देता है। किसी भी छात्र के जीवन में सबसे अहम और जरूरी होता है पढ़ाई को सबसे जरूरी समझना। छात्र को अपने तौर - तरीके और अपने दिमाग में हमेशा यह याद रखना चाहिए कि सबसे ज्यादा जरूरी उसकी पढ़ाई ही है।

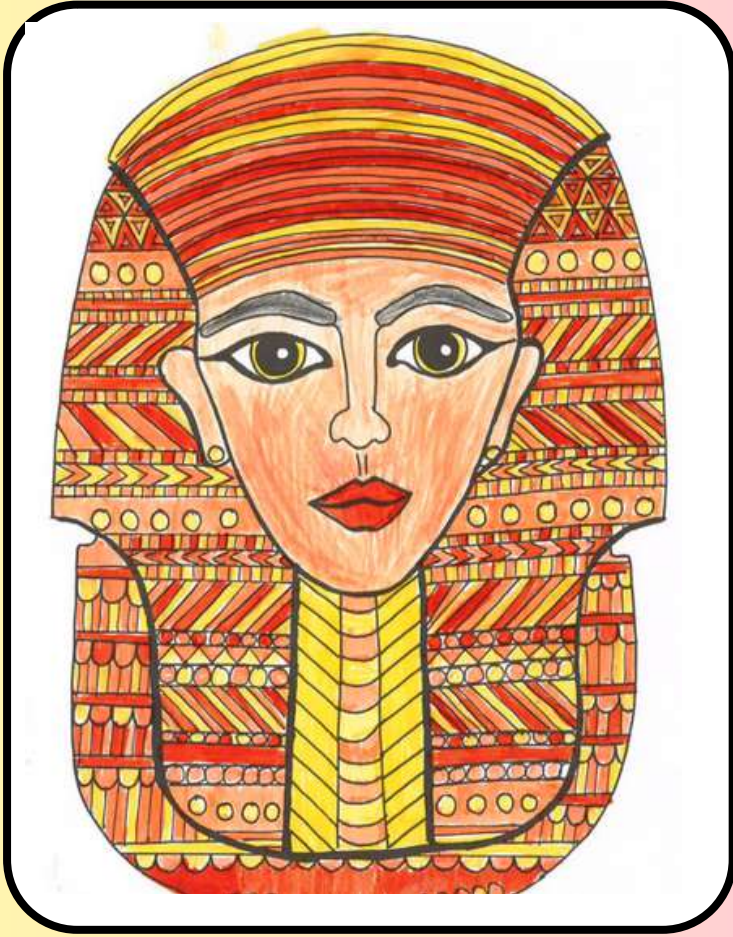
छात्र जो अपनी पढ़ाई के समय सीखता है उसे वह ताउम्र याद रखता है। शिक्षा देने वाले गुरु को प्रेम से धन्यवाद कहना छात्र के तौर - तरीके में शामिल होना चाहिए। छात्र को सदैव कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। शिक्षक के पास ही वह कला है जो मिट्टी को सोने में बदल सकती है।



किसी के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करने में कुछ खर्च नहीं होता है। अपने से बड़ों के प्रति सम्मान दिखाना भी अच्छे व्यवहार का एक अनिवार्य हिस्सा है। चाहे बच्चे अपने माता - पिता, दादा - दादी, शिक्षकों या अन्य वयस्कों के साथ बातचीत कर रहे हों, बच्चों को कम उम्र से ही यह सिखाया जाना चाहिए कि कैसे व्यवहार करना और सम्मानपूर्वक बोलना है।

गलती करना मानवोचित है, क्षमा कर देना देवोचित हैं। जब भी किसी भी प्रकार की गलती हो तो सदैव उसे स्वीकार कर 'मुझे माफ़ करें' कहने की शक्ति होनी चाहिए। फिर वह गलती भले ही जाने में हुई हो या फिर वह गलती अनजाने में हुई हो। सबसे पहले माफ़ी माँगनी चाहिए। उसके बाद गलती का कारण धीमी आवाज में कहना चाहिए। यह भी छात्र के अच्छे तौर - तरीकों में से एक है।

इन बातों को अपनाकर हर छात्र सफलता के उच्च शिखर तक पहुँच सकता है।



अंश कपूर



अंश कपूर



श्रेयांशी समल



सलोनी पाटील

गुरुपदेश



$$s(n-1)$$

$$s(n-1) + k_2$$

नारी

- हेमलता गौड़

भारतवर्ष विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का देश है, जहाँ परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है और इसका दायित्व निभाती है 'नारी'। भारत वर्ष में नारी को माँ और देवी का स्थान दिया गया है। वह त्याग की मूर्ति है जो अपने सपनों का त्याग कर सभी के सपनों को सँवारती हैं। हमने अपने आस - पास कितनी ही महिलाओं को देखा होगा जो घर और बाहर दोनों की जिम्मेदारी संभालती हैं। नारी का एक स्वरूप है - माँ। वही है जो हमें दुनिया में लाती हैं, हमें चलना सिखाती है और हमारे हर दर्द को अपना समझती है। वह हमारे आस - पास साए की तरह घूमती रहती हैं कभी माँ के रूप में, कभी बहन और कभी पत्नी व दोस्त के रूप में, पर हमारी तो आदत है कि जो चीज हमारे पास होती है हम उसकी कद्र नहीं करते हैं इसलिए शायद हम अपने जीवन में उसका महत्त्व भूलते जा रहे हैं।

नारी को वह सम्मान नहीं मिलता है जो कि मिलना चाहिए। क्या हमने कभी उसके सपनों को महत्त्व दिया है ? क्या यह हमारा कर्तव्य नहीं है कि जो हमारी सारी जरूरतों का ख्याल रखती है हम भी उसकी थोड़ी खुशी, थोड़ी हँसी का ख्याल रखें।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक यदि नारी शक्ति का योगदान देखा जाए तो समाज के समक्ष कितने ही उदाहरण हैं जहाँ नारियों ने अपना अभिन्न योगदान दिया है। क्या आप उस सीता या द्रौपदी को भूल सकते हैं ? जिन्होंने अपने पत्नी धर्म का पालन करने के लिए सबकुछ त्याग कर वनवासिन का जीवन बिताया था - अहिल्या, कुंती, मंदोदरी, रानी लक्ष्मीबाई, इत्यादि कितने ही उदाहरण हैं। यदि नारी आगे बढ़ेगी तो परिवार, समाज, देश सभी आगे बढ़ेंगे।

" यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते ,रमन्ते तत्र देवता "



नारी

- डॉ. गीता भट्ट

खिलखिलाती हुई,
 ममता की मूर्ति, प्यार - दुलार, करुणा की सागर - सी।
 मुस्कुराती हुई,
 आँचल में ममता समेटे हुए।
 बेटी, पत्नी, बहू कभी माँ बनकर,
 रिशतों को सहेजे हुए।
 त्याग - बलिदान की मूरत - सी।
 आशा में विश्वास, अंधकार में ज्योति - सी।
 मर्यादा की रस्सी में जकड़ी,
 अंतर्मन में द्वन्द्व लिए।
 खोज रही खुद में खुद को,
 सम्मान की सिर्फ आस लिए।
 पर्वत की ऊँचाई छूती,
 आसमान भी झुक जाता है।
 नारी को अबला न समझो,
 धरती का शृंगार है ये।
 पौरुष की भी जननी है,
 सृष्टि का आधार है ये।



पश्चात्ताप

- मुईनुद्दीन हाशमी

पक्षियों से लगभग सभी बच्चों को प्रेम होता है और बचपन में चंदन को भी पक्षियों से कुछ अधिक ही प्रेम था। विशेष रूप से गौरेया, बुलबुल और फ़ाकता से। यह वह पक्षी हैं जिन्होंने कभी न कभी उसके घर में अपना घोंसला बनाया, उसमें अंडे दिए और उस घोंसले से बहुत से बच्चे निकल कर उड़ भी चुके थे। कभी कोई बच्चा यदि उड़ न पाता और उड़ने का प्रयास करते समय नीचे गिर पड़ता तो चंदन और उसके साथी, उस चिड़िया के बच्चे को उठा लिया करते और उसे दाना-पानी देने का प्रयास किया करते। नानी बार - बार डाँटा करती थीं कि चिड़िया स्वयं ही उसके बच्चों की देखभाल करने में सक्षम होती है। परंतु बाल - मन कहाँ किसी की सुनता है। जब तक बच्चा उनके पास रहता उस बच्चे की माँ चंदन और उनके साथियों के आस - पास ही मंडराती रहती। चिड़िया को उनसे क्या लगाव वह तो अपने बच्चे की चिंता करती थी कि कहीं चंदन नादानी में उसके बच्चे को हानि न पहुँचा दे। बच्चे होते तो नादान ही हैं फिर चाहें वह स्वयं को कितना भी विद्वान समझें। चंदन का घर दुमंज़िला था। सबसे नीचे अंदर की तरफ दो कमरे और कमरों के बाद बरामदा। एक तख्त बाईं ओर पड़ा रहता था और दूसरा दाईं ओर और बीच में बानों से बुना हुआ लोहे का एक पलंग। उसके बाद खुला हुआ आँगन, जहाँ एक अमरूद का पेड़ बरामदे के बिलकुल बाद में और एक पेड़ आँगन के अंत में मुख्य द्वार के पास था। उस अमरूद के फल द्वार से बाहर झाँका करते थे।



जिन्हें देखकर बच्चे ललचाई नज़रों से वहाँ से गुज़रते। कुछ तो इतने सभ्य होते थे कि पूछ लिया करते थे, “क्या हमें कुछ अमरूद मिल सकते हैं?” और चंदन के घरवाले उन्हें अमरूद दे भी देते। इतने प्रेम से बच्चों ने माँगा तो भला मना कैसे कर सकते हैं। कुछ ऐसे बच्चे भी होते जो चंदन के घरवालों को कष्ट देना उचित न समझते थे। वे बाहर से ही दरवाज़े पर चढ़कर अमरूद तोड़ लिया करते। वे लोग सामान्यतः उन बच्चों को रोका तो न करते थे मगर जब उन्हें पता चला कि उस पेड़ पर चिड़िया ने अंडे दिए हैं तो ज़रा सावधान हो गए थे। चंदन अपने साथियों के साथ सारा दिन घोंसले को ताका करता। विद्यालय से आकर, बस्ता एक ओर रख सारे बच्चे इकट्ठा होते और सबसे पहले देखते कि चिड़िया के बच्चे निकले या नहीं। वे सब कभी नीचे से ही अनुमान लगा लेते थे तो कभी अमरूद के पेड़ के ऊपर भी चढ़ जाते। कभी मौसी डाँटती तो कभी नानी। और फिर लगती उनकी हाज़िरी माता जी के सामने। इसी प्रकार दिन बीते और वह दिन भी आ गया जब चूँ - चूँ की आवाज़ें आने लगीं। हाँ ! चिड़िया के बच्चे निकल आए थे। सारे बच्चे चिड़िया के बच्चों को देखने को व्याकुल हो उठते। चिड़िया को चोंच में कीड़े दबाए आते देखते तो सारे बच्चे छुपकर अमरूद के पेड़ पर अपनी नज़र जमा लेते।

चिड़िया जैसे ही घोंसले की मुंडेर पर बैठती तीन छोटी - छोटी चोंच घोंसले से बाहर झाँकने लगतीं। चीं - चीं की वह ध्वनि चंदन भैया को ऐसी लगती जैसे बच्चे बोल रहे हों, "खाना मुझे दो"।

"नहीं-नहीं मुझे दो।"

"अरे ! नहीं माँ, मुझे दो।"

अपने साथियों को विद्वानों की तरह चिड़िया के बच्चों की बातें समझाया करता।

बाल मन अनेक कल्पनाओं से भरा होता है। बाल मन तो आकाश में उड़ते हुए बादलों में हाथी, घोड़े और न जाने कौन - कौन सी आकृति ढूँढा करता है। कल्पना करता है कि काश उनके भी पंख होते तो वे भी बिना रोक - टोक कहीं भी उड़ जाया करते। कभी पैसों का पेड़ लगाने की कल्पना करेगा तो कभी सोचेगा कि सुबह को जब आँख खोले और तकिए के नीचे देखे तो उसे बहुत सारे पैसे मिल जाएँ। सोचेगा काश वह भी शक्तिमान की तरह उड़ सकता और दायँ हाथ उठा कर गोल - गोल घूमने का प्रयास भी किया करता। किंतु बाद में समझ जाता कि अंततः है तो यह उसकी कल्पना ही। बस चंदन भी इन्हीं कल्पनाओं में खोया रहता था और अपनी कल्पनाशक्ति के माध्यम से ही चिड़िया के बच्चों की बातें अनुवादित कर अपने साथियों को बताया करता। समय बीता और दो बच्चे उस घोंसले में से उड़ गए। तीसरा बच्चा भी उड़ने का प्रयास ही कर रहा था किंतु उसका वह प्रयास सफल न हो सका। वह धप - से नीचे गिर पड़ा। चंदन की दृष्टि तो रहती ही थी हर समय उस घोंसले पर। उसकी दृष्टि से बच्चा कैसे बचता। यदि बच भी जाता तो वहाँ आने - जाने वाली बिल्ली मौसी के मुँह का निवाला बन जाता। चंदन ने झट - से बच्चे को उठा लिया। बच्चे की एक टाँग में घाव था। उड़ने में तो था ही असमर्थ और फुदक भी न सकता था। फिर भी चंदन के हाथ से बचने का प्रयास किया, छोटे - छोटे परों को फड़फड़ाया और हाथ से निकलने का प्रयास किया। फिर भी चंदन तो उस्ताद था, पकड़ ही लिया। नानी देख रही थीं। बोलीं, "लला मत पकड़ो। चिड़िया स्वयं ध्यान रख लेगी"। चंदन बोला, "नानी बिल्ली से बचा रहा हूँ। बेचारा जान से जाएगा।"

"जान से तो जाएगा ही, वहाँ से बच गया तो तुम्हारे हाथों में दम तोड़ देगा।" नानी ने समझाते हुए कहा।

चंदन यदि नानी की बात समझ जाता तो बच्चों को नादान कौन कहता। नहीं माना और चिड़िया के बच्चे को क्या खिलाए इस चिंता में दाना - पानी ढूँढने लगा। साथियों ने उसकी पूरी - पूरी सहायता की। नानी बार - बार अपनी बात दोहरातीं और चंदन अनसुना करता रहता। किंतु वह अधिक समय तक नानी की बातों को अनसुना न कर सका। बच्चे को अपने साथियों की सहायता से खाना तो खिला ही चुका था सोचा चलो अब नानी की बात मान ली जाए। उसने चिड़िया के बच्चे को बरामदे में लगे लोहे के एक कड़े में बैठा दिया और दूर जाकर बैठ गया।

"अब मैंने इसे बैठा दिया है नानी जी। अब जब चाहेगा स्वयं उड़ जाएगा।" चंदन ने कहा।

नानी थोड़ा मुस्कुरा दीं। इतने में चंदन देखता है कि उस बच्चे ने ज़ोर से पंख फड़फड़ाए और फुर्र से उड़ गया। चंदन ने यह देखा तो बड़ा प्रसन्न हुआ किंतु अगले ही क्षण देखा जैसे एक बिजली - सी कड़की। एक बाज़ जो शायद कहीं घात लगाए बैठा था चिड़िया के बच्चे पर झपटा और अपने फौलादी पंजों में दबाकर उड़ गया।

प्रसन्नता, पश्चात्ताप में बदल गई। चंदन स्वयं को कोस रहा था कि काश ! उसने बच्चे को न छोड़ा होता तो शायद वह बच्चा जीवित रहता।



सकारात्मक विचार

संकलित द्वारा - डिम्पी डागर

रुक गया है तू क्यों ?
क्या तुझे आभास नहीं ?
जब तक न मिले मंज़िल यहाँ,
रुकने तक का एहसास नहीं।

ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे
फ़ौलाद का भी बल निकलेगा,
ज़िंदा रख, दिल में उम्मीदों को
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।

कुछ ना मिला तो, कुछ सीख जाओगे
ज़िंदगी का अनुभव साथ ले जाओगे,
गिरते पड़ते संभल जाओगे
फिर एक बार तुम जीत जाओगे।

सत्य की जीत ही तेरा लक्ष्य हो
अपने मन का धीरज, तू कभी न खो
रण छोड़ने वाले होते हैं कायर
तू तो परमवीर है, तू युद्ध कर - तू युद्ध कर...

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़, मत भागो तुम
कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती ।





अस्मि देशमुख



तनिस्वेता



नयना पुन्नथ



हिया ब्रह्मभट्ट

गतिविधियों में हम



PIES TALK

एपिसोड - 7

डॉ कलाम के पूर्व सलाहकार सृजन पाल सिंह ने विद्यार्थियों से चर्चा की

हिंदी व अंग्रेजी विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित मासिक कार्यक्रम PIES TALK SHOW के सातवें एपिसोड में श्री सृजन पाल सिंह उपस्थित रहे। सृजन पाल सिंह पूर्व राष्ट्रपति डॉ कलाम के सलाहकार और डॉ कलाम की किताबों में सहलेखक की भूमिका निभा चुके हैं। वर्तमान में सृजन पाल सिंह कलाम सेंटर और होमी लैब नाम की संस्था को संचालित करते हुए डॉ कलाम के विचारों को आगे बढ़ाते हुए भारत के लिए विज्ञान, तकनीक व शिक्षा के क्षेत्र में भिन्न प्रकार के उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के विद्यार्थियों के साथ सृजन पाल ने 'भविष्य की दुनिया को आकार देने में किसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण' पर बातचीत की। इस सत्र में विद्यार्थियों ने सृजन पाल से भविष्य की संभावनाओं और उनकी चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की। तकनीक, विज्ञान, पृथ्वी से बाहर की दुनिया, पानी का संरक्षण, पर्यावरण का महत्त्व, वैश्विक संगठनों का महत्त्व जैसे विषयों पर सृजन पाल सिंह ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

इस चर्चा की अध्यक्षता विद्यालय की उप – प्रधानाचार्या श्रीमती पद्मजा मेनन द्वारा किया गया। इस चर्चा में विद्यालय के आयुष बिसोई, सुजीत शरणार्थी, सारा जॉर्ज, माही शाह, सायदा उज़्मा ने प्रतिनिधि विद्यार्थी के रूप में सहभाग किया। हेत्वी पटेल और शान्वी वर्मा ने इस कार्यक्रम का संचालन किया।





Private International English School
Bharatiya Vidya Bhavan Abu Dhabi



Creating global citizens through innovation and excellence in education.

PIES TALK EPISODE - 7

To promote research, independent learning, and communication.

Date : 29 April 2023 - Time : 10:00 AM UAE / 11:30 AM IST

GUEST



Mr. Srijan Pal Singh
Author, Scientist and Former Advisor to Dr. APJ Abdul Kalam
Founder and CEO, Homi Lab
Founder and Mentor at Dr. A.P.J. Abdul Kalam Centre
Honorary Executive Chairperson, Dr. Vikha Patil Foundation
Member, Expert Panel, Shyama Prasad Mookherjee National Rurban Mission, Government of India

TOPIC

WHAT WILL SHAPE THE WORLD OF TOMORROW ?

PRESIDED OVER BY



Vice Principal, PIES, Abu Dhabi

DELEGATES



Sujith Sharanarathi



Ayush Bisoyi



Syeda Uzma

MODERATORS



Shaanvi Verma



Hetvi Patel



Sara George



Mahi Shah

Live 

www.bhovansabudhabi.com

एपिसोड - 8

अनामिका मिश्रा ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया

हिंदी व अंग्रेजी विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित मासिक कार्यक्रम 'PIES TALK SHOW' के आठवें एपिसोड में सुश्री अनामिका मिश्रा उपस्थित रहीं। अनामिका मिश्रा अंग्रेजी साहित्य की प्रमुख व प्रख्यात लेखिका हैं। जिनकी अब तक कुल 5 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। अनामिका लेखिका होने के साथ ही प्रख्यात ब्लॉगर भी हैं। जिनका ब्लॉक भारत के प्रमुख ब्लॉगों में गिना जाता है। अनामिका मिश्रा से भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के विद्यार्थियों ने 'साहित्य सामाजिक संवेदनाओं का दर्पण होता है' विषय पर बातचीत की। इस बातचीत में साहित्य के भिन्न दृष्टिकोण, साहित्य की उपयोगिता, साहित्य के सामाजिक प्रतिबिंब, साहित्य का समाज पर पड़ता असर जैसे विषय शामिल रहे। साथ ही एक सफल लेखक बनने के लिए अनामिका ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि लिखने से पहले पढ़ना और नियमित अभ्यास अति अनिवार्य है।

इस चर्चा की अध्यक्षता विद्यालय की सहायक उप – प्रधानाचार्या श्रीमती जनारजनी द्वारा किया गया। इस चर्चा में विद्यालय के आरिश प्रसाद, मैथिली राजेश, गौरी नारायणन और रयहान फरमान ने विद्यार्थी प्रतिनिधि के रूप में सहभाग किया। अनुष्का लाले और शांभवी रावल ने इस कार्यक्रम का सफल संचालन किया।



Private International English School
Bharatiya Vidya Bhavan, Abu Dhabi

Creating global citizens through innovation and excellence in education.

PIES TALK
EPISODE - 8

To promote research, independent learning, and communication.

Date : 30 May 2023 - Time : 4:30 PM UAE / 6:00 PM IST

GUEST



Ms. Anamika Mishra
Author, Travel Blogger
Founder, ResponsibleYatri.org

TOPIC
LITERATURE MIRRORS SOCIAL VIBES

PRESIDED OVER BY



Ms. Janarajani Malalagama
Asst. Vice Principal, PIES, Abu Dhabi

DELEGATES





Mythili Rajesh Ryhan Farman Arishh Prasad

MODERATORS





Shambhavi Samir Raval Anushka Lale Gowri Aatherjanam Narayanan

Live YouTube
www.bhavanabudhabi.com



एपिसोड - 9

डॉ मोहम्मद आमीन ने लोकतंत्र की खूबियों से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया

हिंदी व अंग्रेजी विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित मासिक कार्यक्रम 'PIES TALK SHOW' के नौवें एपिसोड में डॉ मोहम्मद आमीन उपस्थित रहे। डॉ आमीन भारतीय चुनाव आयोग के पूर्व मुख्य प्रोटोकाल अधिकारी के रूप में कार्य कर चुके हैं। डॉ आमीन के पास प्रबंधन क्षेत्र का लंबा अनुभव है। डॉ आमीन को देश के राष्ट्रीय चैनलों पर भिन्न विषयों के लिए विश्लेषक के रूप में नियमित रूप से देखा जा सकता है। डॉ आमीन से भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के विद्यार्थियों ने '21 वीं में सदी लोकतंत्र की चुनौतियाँ और संभावनाएं' विषय पर बातचीत की। इस बातचीत में लोकतंत्र की चुनौतियों और संभावनाओं पर सविस्तार चर्चा की गई। साथ ही चुनाव आयोग की निष्पक्षता और दुनिया के अन्य देशों के बीच इसकी विश्वसनीयता को रेखांकित किया गया।

इस चर्चा की अध्यक्षता विद्यालय की प्रधानाध्यापिका वनिता वॉल्टर द्वारा किया गया। इस चर्चा में विद्यालय के मोहम्मद साद, श्रीलक्ष्मी नवीन, अंजना प्रसाद और तलिथा जैन ने विद्यार्थी प्रतिनिधि के रूप में सहभाग किया। अक्षिता पारेख और अदिति पाठक ने इस कार्यक्रम का सफल संचालन किया।





Private International English School
Bharatiya Vidya Bhavan Abu Dhabi
Creating global citizens through innovation and excellence in education.



PIES TALK
EPISODE - 9

To promote research, independent learning, and communication.

Date : 23 June 2023 - Time : 4:30 PM UAE / 6:00 PM IST

GUEST



Dr. Mohd Amin
Ex Joint Director & Chief of Protocol, Election Commission of India
Ex Deputy General Manager, Public Relations,
Authority of India (Ministry of Civil Aviation, Gov of India)

TOPIC

OPPORTUNITIES AND DRAWBACKS : DEMOCRACY IN THE 21ST CENTURY

PRESIDED OVER BY



Ms. Vanitha Walter
Head Mistress, PIES, Abu Dhabi

DELEGATES



Mohammed Saad



Sreelakshmi Naveen



Anjana Prasad

MODERATORS



Akshita Parikh



Aditi Pathak



Talitha Jain

Live YouTube
www.bhavanabudhabi.com

स्क्रीन समय घटाने की जागरूकता हेतु विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन

हिंदी विभाग के 'स्पंदन क्लब' की ओर से 03 मई, 2023 को विशेष हिंदी प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को स्क्रीन से होने वाले लाभ एवं हानि से अवगत करवाना था। आजकल बच्चों का मोबाइल, टैबलेट और टीवी स्क्रीन पर ज्यादा समय बिताना एक समस्या बनती जा रही है। ऐसे में स्क्रीन पर ज्यादा समय बिताने के नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों पहलुओं की जानकारी एक नाट्यरूपांतरण द्वारा दी गई।

सर्वप्रथम विद्यार्थियों द्वारा संपूर्ण प्रार्थना सभा हिंदी में आयोजित की गई तत्पश्चात विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य भूमिका कक्षा 'पाँचवी - इ' के विद्यार्थियों ने निभाई। इस प्रार्थना सभा द्वारा 'स्क्रीन समय' की भिन्न प्रकार की हानियों से अवगत करवाते हुए विद्यार्थियों को प्रण दिलवाया गया कि जितना संभव हो स्क्रीन समय को कम करना है। यह प्रार्थना सभा अत्यंत आकर्षक, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक रही। सभी ने इस प्रार्थना सभा की सराहना करते हुए ऐसे विषयों को अनिवार्य बताया। हिंदी विभाग का उद्देश्य है कि हिंदी भाषा में प्रार्थना सभा करवाने से विद्यार्थियों की हिंदी भाषा के प्रति रुचि एवं रचनात्मकता का विकास होगा। 'हिंदी स्पंदन क्लब' विद्यार्थियों के समूल विकास के उद्देश्य से निर्मित किया गया है। जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में हिंदी भाषा का निरंतर विकास हो रहा है।



विद्यार्थी जीवन में उत्तरदायित्व का महत्त्व विशेष प्रार्थना सभा

विद्यार्थियों के जीवन में उत्तरदायित्व का महत्त्व विषय पर 1 जून 2023 को कक्षा-2 के छात्रों द्वारा प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। प्राथमिक हिंदी विभाग के छात्रों ने इसमें हिस्सा लिया।

प्रार्थना सभा में नन्हें विद्यार्थियों ने अपने उत्तरदायित्वों को ध्यान में रखते हुए यह संदेश दिया कि वह विद्यालय समय पर आएंगे और विद्यालय के नियमों का पालन कर सभी का आदर करेंगे। इन नन्हें विद्यार्थियों ने रोचक तरीके से अपनी - अपनी प्रस्तुतियाँ दी। इनके आत्मविश्वास व हिंदी की प्रस्तुति देखकर कर सभा में उपस्थित सभी ने इनकी सराहना की।

भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी का हिंदी विभाग विद्यार्थियों को उत्तरदायित्व बनाने तथा नैतिक मूल्यों का पालन करने के लिए सदैव इसी तरह प्रेरित करता है।



सीबीएसई कक्षा 10 वीं 2022 - 23

हिंदी भाषा उच्च प्राप्तांक

96



शाम्भवी रावल



आयुष पात्रो

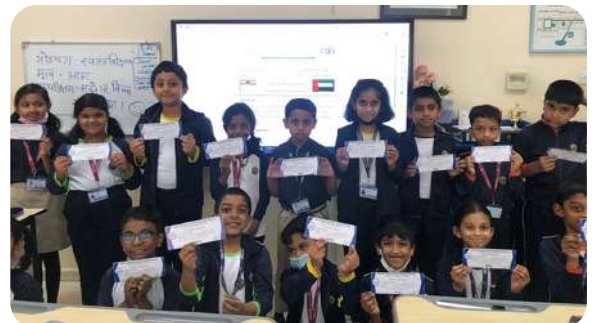


हिंदी भाषा

शत प्रतिशत प्राप्तांक



कक्षा 2 - A



कक्षा 3 - C

हिंदी भाषा शत प्रतिशत प्राप्तांक



कक्षा 3 - D



कक्षा 3 - E



कक्षा 4 - B



कक्षा 4 - B



कक्षा 4 - E



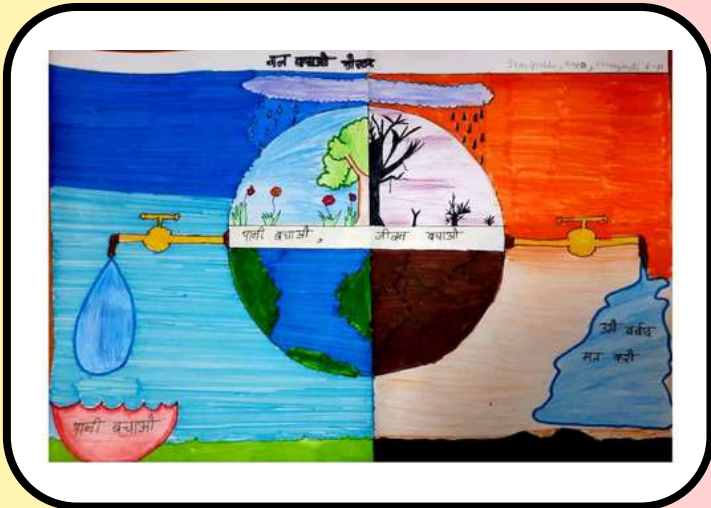
कक्षा 4 - F



एंड़िया जोस



संपत्ति पर्ई



शशिप्रभा , हया, श्रेयांशी



हिती श्री अशोक



सादम्बरी गोपकुमार कृष्ण

केरल की सरल सुंदरता

- हृदय मेनन

जब कोई प्रकृति में रोमांच की तलाश करना चाहता है, तो आपके दिमाग में कई तरह की जगहें आती हैं। शायद दक्षिण अमेरिका के हरे भरे जंगल या स्विट्जरलैंड के विशाल पहाड़। लेकिन, कभी - कभी सबसे बड़ा साहसिक कार्य वह होता है जिसे हमने अनदेखा कर दिया होता है। पिछले वसंत में केरल की अपनी यात्रा के दौरान मैंने यही सीखा।

आइए, मेरे साथ केरल की सैर कीजिए :

केरल एक ऐसी जगह है जहाँ प्रकृति आधुनिकता से भरी हुई है। केरल का सबसे अच्छा हिस्सा निस्संदेह इसकी हरियाली है। ऐसा लगता है जैसे आप किसी पेड़ या घनी झाड़ी में कदम रखे बिना दो कदम आगे नहीं बढ़ सकते, जो कि आजकल शायद ही कहीं और मिल सके। केरल में आप रोमांच की तलाश में नहीं होते हैं, लेकिन रोमांच आपको खोज लेता है। हम आधी रात को हवाईअड्डे पर उतरे और मैं तुरंत कह सकता था कि यह एक रोमांचक प्रवास होने वाला था। जिस क्षण हमने हवाईअड्डे से बाहर कदम रखा, कोच्चि की मंत्रमुग्ध करने वाली सुंदरता ने हमें प्रभावित किया और घर की गंध हवा में भटक रही थी। कोच्चि हवाईअड्डा दुनिया में एकमात्र ऐसा है जो केवल सोलर पैनलों द्वारा संचालित होता है और यह तथ्य पूरे एयरपोर्ट पर विज्ञापित है। एयरपोर्ट से बाहर निकलने के बाद हम सीधे अपनी दादी के घर गए, जो सप्ताहभर के लिए हमारा 'हब' बनने वाला था। जहाँ से हमने त्रिपुनिथारा (जिस जिले में हम थे) की संस्कृति का पता लगाने की योजना बनाई। यहाँ तक का क्षेत्र मेरी दादी के घर के पास, वडक्केकोट्टा का था, जो मुख्य शहर की व्यस्त रोशनी और शोर से दूर राहत की जगह थी। हालाँकि, वहाँ एक नई मेट्रो का निर्माण किया गया था और वडक्केकोट्टा सभी व्यवसायों के बीच में था, अत्याधुनिक होने के बावजूद इसने अपनी समृद्ध संस्कृति के परिणामस्वरूप अपने पुराने, शांतिपूर्ण आकर्षण को बरकरार रखा।

हमने एक छोटे से रेस्टोरेंट में खाना खाया। संयोग से यह एक 'स्टार्टअप' था। वडक्केकोट्टा एक ऐसा स्थान बनता जा रहा था जहाँ स्व - प्रेरित लोग अपने सपनों का पीछा करने के लिए आते थे और हर एक कोने में एक नया उद्यम या स्टोर होता था। यहाँ इस तरह के नए उद्यमों के कई उदाहरण देखे जा सकते हैं। यह उन चीजों में से एक है जो मुझे जगह के बारे में पसंद है, यह लगातार बदल रही है और विकसित हो रही है।



वास्तव में, मेरी दादी के घर के आसपास के क्षेत्र को राजाओं की भूमि कहा जाता है और पूर्णनाथरायसा का मंदिर एक महत्त्वपूर्ण मंदिर था, जो सुबह चाय पीने के बाद हमारी पहली मंजिल थी। मंदिर के चारों ओर आभा का वर्णन करना बहुत कठिन है, जब तक कि कोई वास्तव में इसका अनुभव न करे। मंदिर के चारों ओर की हवा आध्यात्मिकता की भावना से भरी हुई है और सुंदर वास्तुकला की प्रशंसा करना एक खुशी की बात है। मंदिर का एक समृद्ध इतिहास है और जब आप अंदर जाते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे आप खुद उस इतिहास का अनुभव कर रहे हों, पत्थर के रास्ते और खूबसूरत मूर्तियाँ।



हमने जिस अन्य मंदिर का दौरा किया, वह छोटानिक्करा मंदिर था, जो अपने इतिहास के साथ पूर्णात्रियसा के अनुभव के समान था। यह मेरी दादी के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह वह जगह है जहाँ उन्होंने अपने पिता के साथ समय बिताया था और उन्होंने मुझे उन कहानियों को सुना कर अतीत के बारे में बताकर मुझमें उन भावनाओं को प्रज्वलित कर दिया।

मेरी यात्रा का मुख्य आकर्षण एट्टुमानूर में मेरे पिता के घर, अतीत में अभी भी डूबे हुए स्थान पर जाना था। यह एक ऐसी जगह है जो पुरानी नहीं लगती है और इसके आस - पास की हर चीज अभी भी पुराने समय की याद दिलाती है, एक अदृश्य धुंध से भरी हुई है, जो आपको अपनी ओर आकर्षित करती है।



यात्रा और मैं

- हेत्वी पटेल

घूमना किसे पसंद नहीं है और वो भी जॉर्जिया जाने मिले तो पूछो ही मत। जैसे ही मैं वहाँ पहुँची, मुझे पता था कि यह यात्रा बड़ी ही यादगार रहेगी। जॉर्जियाई लोगों की दयालुता और आतिथ्य ने मेरा तो दिल ही जीत लिया और वहाँ के परिदृश्यों ने मुझे उनकी प्रशंसा करने पर मजबूर कर दिया था। मैंने अपनी पूरी यात्रा के दौरान कुल तीन शहरों का दौरा किया। इस उल्लेखनीय यात्रा पर हमारा पहला दर्शनीय स्थल ज्वारी मठ था। यह एक पहाड़ की चोटी पर स्थित है, जो मत्सखेता शहर का लुभावना दृश्य प्रदान करता है। इसके शांतिपूर्ण वातावरण ने इसे हमारी यात्रा की शुरुआत के लिए एकदम उपयुक्त बना दिया। स्थानीय मठ के एक अच्छे सफर के बाद हम पुराने शहर की ओर बढ़े जिसे 'ओल्ड सिटी' के नाम से जाना जाता है। वहाँ की संकरी गलियाँ जॉर्जिया की रंगीन, सुंदर संस्कृति, परंपरा का आकर्षण हम सभी लोगों का मन मोह रही थी।

हमने सिओनी कैथेड्रल का भी भ्रमण किया, जहाँ वर्जिन मैरी द्वारा मत्सखेता के रास्ते में बनाए गए 'जॉर्जियाई क्रॉस' को लोग बहुत मानते हैं। पथरीली सड़कों पर चलते - चलते, रंगीन बालकनियों को निहारने में कब तीन घंटे व्यतीत हो गए पता ही नहीं चला। ओल्ड सिटी में मिलने वाले जॉर्जिया के ताज़े जामुन और इन जामुनों के स्वाद वाली आइसक्रीम को एक बार ज़रूर चखना चाहिए।

अगले दिन हम केवटाउन गए, जहाँ कई प्राचीन चर्च, घर आदि हैं, जिन्हें चट्टानों में उकेरा गया है। केवटाउन एक बड़ी ही लुभावनी जगह है जिसकी प्राचीन गुफाओं में छिपे रहस्यों से किसी का भी चौंकना तो निश्चित ही है।

अगली सुबह डायमंड ब्रिज जाते हुए रास्ते में हमने नाश्ते के लिए एक स्थानीय बेकरी पर रुककर जॉर्जिया की विशेषता खाचापुरी को आजमाया। जो आमतौर पर पसंद के अनुसार भरावन से भरा नान होती है। खाचापुरी के कई प्रकारों में से ओसेटियन खाचापुरी और इमेरुली खाचापुरी मेरी सबसे पसंदीदा है जिन्हें आपको अवश्य ही चखना चाहिए!



डायमंड ब्रिज पर चलना ऐसा लग रहा था कि मानो नीचे बहते पानी के ऊपर हवा में चल रहे हों। हमने वहाँ कई तस्वीरें खिंचवाई और वहाँ के अति सुंदर और मनोरम दृश्य का आनंद उठाया।

हमारी यात्रा का अंतिम स्थल गुडौरी के बर्फीले पर्वत थे, जहाँ हमने स्कीइंग करने, स्नोमैन बनाने और अपने दोस्तों के साथ बर्फ से खेलने में एक पूरा दिन बिताया। वहाँ की बर्फबारी की एक अलग और अद्भुत ही अनुभूति है जो किसी का भी मन मोह ले।

मेरी यह यात्रा बहुत ही अविस्मरणीय थी। मैंने जॉर्जिया के इतिहास, संस्कृति और सुंदरता को इस तरह से अनुभव किया है कि मैं उन्हें कभी भुला नहीं पाऊँगी।



लिखो और जीतो



'छुट्टियाँ और हम'



विषय पर अपनी ग्रीष्मकालीन छुट्टियों का अनुभव लिखिए और साझा कीजिए।
उत्कृष्ट लेखन को आगामी अंक में प्रकाशित करने के साथ ही विशेष प्रमाणपत्र प्रदान
किया जाएगा।



मैं भी लेखक

आपने अब तक बहुत - सी कहानियाँ, उपन्यास आदि पढ़ते हुए कई बार सोचा होगा कि काश ! मैं भी लेखक / लेखिका होता / होती। शब्दों का सफ़र तय करते हुए कई बार आपके पंख भी फड़फड़ाए होंगे, कल्पना के सागर में आपने भी कई बार गोते खाए होंगे, आसमान की ऊँचाइयों को छूने की कोशिश की होगी तो आइए आपके सपनों को पूरा करते हैं, हम और आप मिलकर गढ़ते हैं शब्दों की दुनिया 'आपकी अपनी किताब'।

भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के हिंदी विभाग द्वारा कक्षा 5 वीं से कक्षा 12 वीं के विद्यार्थियों के लिए सुनहरा अवसर है कि आप अपने शब्दों को गूँथकर कहानी में ढालकर एक नई पहचान बनाइए। आपकी अपनी कहानी को लिखकर लेखक बनने का सपना साकार कीजिए। कक्षा 5 वीं से 12 वीं के विद्यार्थियों द्वारा लिखी गई कहानियों में से हिंदी विभाग द्वारा कुल 51 कहानियों का चयन किया जाएगा। जिन कहानियों को किताब का स्वरूप देकर प्रकाशित किया जाएगा। इस किताब को आईएसबीएन क्रमांक के साथ प्रकाशित कर ऑनलाइन उपलब्ध करवाया जाएगा।

- आपकी कहानी स्वरचित होनी चाहिए।
- आपकी कहानी किसी सच्ची घटना या कल्पना पर आधारित हो सकती है।
- कहानी की शब्द मर्यादा 500 से 700 शब्द होनी चाहिए। शब्द संख्या में वृद्धि होने के बाद भी आपकी कहानी स्वीकार्य की जाएगी।
- गूगल, व्हाट्सअप या किसी अन्य माध्यम से ली गई सामग्री अस्वीकार्य होगी।
- आप अपनी कहानी दिनांक 25 अगस्त 2023 तक भेज सकते हैं।

आपकी कहानी ravi.shukla@bhavansabudhabi.com पर जमा कीजिए।

बूझो तो जाने

जोहन जिमी जॉर्ज

'मैं'
कौन हूँ ?

जितना अधिक आप लेते हैं,
उतना ही आप पीछे छूट जाते हैं।

वह क्या है जो आपका है, लेकिन उसका इस्तेमाल
आपसे ज्यादा दूसरे लोग करते हैं?

'मैं'
कौन हूँ ?

'मैं'
कौन हूँ ?

जब मैं गंदा होता हूँ तो मैं गोरा होता हूँ और जब मैं
साफ होता हूँ तो काला होता हूँ।

हिंदी और भविष्य



'हिंदी और भविष्य'
विषय पर अपना शोध पूर्ण कार्य जमा कीजिए और हिंदी दिवस
पर विशेष पुरस्कार पाइए।



हिंदी विभाग

प्राइवेट इंटरनेशनल इंग्लिश स्कूल, अबु धाबी

भारतीय विद्या भवन, मिडिल ईस्ट